thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुख पत्र

अक्टूबर-नवम्बर २०१४

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी

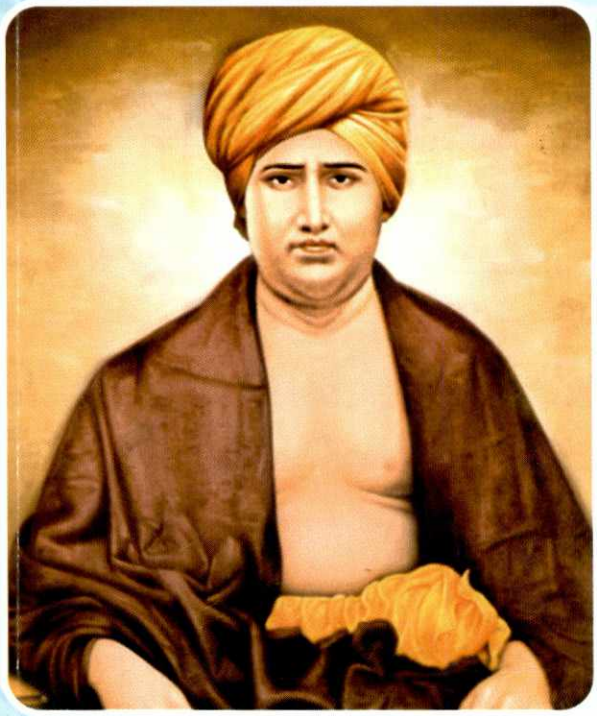

**महर्षि दयानन्द सरस्वती**

शंकर दिया बुझाए दिवाली को देह का
कैवल्य के विशाल वदन में मिला गया
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।

## मासों में स्मरणीय आर्य समाज की महान विभूतियां

लाला लाजपत राय
(२८.११.१८६५ - १७.११.२८)

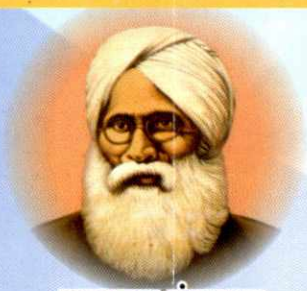

महात्मा हंसराज
(१९.०४.६४ - १५.१२.३९)

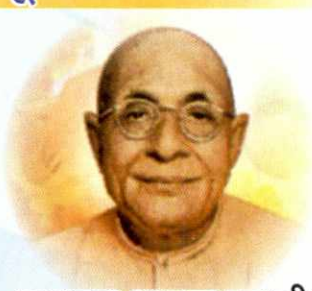

महात्मा आनन्द स्वामी
(१८८३ - २४.१०.७७)

सभा कार्यालय : दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

thearyasamaj.org

# वह सर्व हितकारी है

अभव देव विद्यालंकार

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात् शुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात् ।।

ऋ. ७. ५९.१२ । अथर्व. ३/६०

**शब्दार्थ** (तत्) वह (देवहितं ) देवों का हितकारी (चक्षु) चक्षु, सबको दिखाने वाला, सर्वाध्यक्ष, ज्ञानस्वरूप (पुरस्तात्) हमारे सामने, सदा समक्ष (शुक्रं ) शुद्ध रूप (उत् चरत्) उदय हुआ हुआ है। उसकी सहायता ले हम (शतं शरदः) सौ वर्ष तक (पश्येम) देखें, (शतं शरदः जीवेम) सौ वर्ष तक जीवें, (शतं शरदः शृणुयाम) सौ वर्ष तक सुनें (शतंशरदः प्रब्रवाम) सौ वर्ष तक बोले, (शतं शरदः अदीनाः स्याम) सौ वर्ष तक अदीन रहें, (शतात् शरदः भूयश्च) सौ वर्ष से अधिक भी देखते सुनते बोलते हुए अदीन हीकर जीते रहें।

## विनय

देखो सामने यह सूर्य, यह संसार की आंख, यह देवों का हितकारी चक्षु अपने निर्मल शुक्र प्रकाश में चमक रहा है, उदित हो रहा है। नहीं, और गंभीरता से देखो वह महान् सूर्य, प्रेरक प्रभु, हम में से प्रत्येक के सम्मुख सदा उदय हुआ है। अपने प्रकाश से सब संसार को दर्शनशक्ति देता हुआ सदा सब देवस्वभाव मनुष्यों का निरन्तर हित करता हुआ यह परम विशुद्ध चक्षु अनादि काल से चमक रहा है। आओ मनुष्यों ! आओ, हम इस सूर्य को देखते हुए सौ वर्ष तक जीते रहें, हम सौ वर्ष तक इस दिव्य सूर्य को आन्तर नेत्रों से अनुभव करते रहें और सौ वर्ष तक उसकी अनुकूलता में प्राणों को धारण करते रहें। ओह ! यदि हम याद रखें कि ऊपर वह आंख हमें सदा देख रही है, वह विशुद्ध चक्षु हमें निरन्तर ठीक ठीक जान रही है तो हम क्यों न विशुद्ध आचरण वाले होंगे, और क्यों न पूरे सौ वर्ष तक जीने वाले होंगे ? यदि हम ध्यान रखें कि वह देवों का हित चक्षु निरन्तर हमारी अध्यक्षता कर रहा है तो हम क्यों न दिव्य आचरण वाले होंगे, क्यों, न सौ वर्ष तक दिव्य जीवन ही बितायेंगे ? तो, भाइओ ! आओ, हम उस सूर्य के प्रकाश में सौ वर्ष तक देखें, सौ वर्ष तक जीवें; उस दिव्य आंख के नीचे सौ वर्ष तक सुनें, सौ वर्ष तक प्रवचन करें और उसकी ही अध्यक्षता में सौ वर्ष तक अदीन स्वावलम्बी और उत्साहपूर्ण जीवन व्यतीत करें। उसकी अध्यक्षता में रहना और दीन पराधीन होना यह कैसे हो सकता है? नहीं नहीं, हम तो सौ वर्ष से भी अधिक देर तक देखते और जीते हुए सुनते और सुनाते हुए अपराधीन पुरुषार्थमय पूर्ण जीवन बितायेंगे एवं अदीन होकर हम सौ वर्ष से भी अधिक जीवेंगे। अवश्य सौ वर्ष से भी अधिक जीवेंगे।

'वैदिक विनय' से साभार

thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य सेवक

## आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११६ अंक १० - ११
सृष्टि संवत १९६०८५३११५
दयानन्दाब्द - १९०
संवत - २०७१
सन् - २०१४ अक्टूबर व नवम्बर

**प्रधान**
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो. नं. ०९४२२१५५८३६

**मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक**
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ०९३७३१२११६४

**सम्पादक एवं उपप्रधान**
जयसिंह गायकवाड़, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
email : jasysinghgaekwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड, कृपाल चौक,
मदन महल, जबलपुर

**सह सम्पादक**
पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, नागपुर
मो. : ०९९७००८००७४

**सह संपादक एवं कार्यालय मंत्री**
अशोक यादव, नागपुर
मो. : ९३७३१२११६३

**कार्यालय पता :**
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर,
नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क. ०७१२-२५९५५५६

## अनुक्रमणिका


| क्र. | लेख | लेखक | पृष्ट क्र. |
|---|---|---|---|
| १. | वह सर्व हितकारी है | अभय देव विद्यालंकार | २ |
| २. | सम्पादकीय | जयसिंह गायकवाड़ | ४ |
| ३. | स्वामी दयानन्द की विलक्षणता | डॉ. धर्मवीर | ६ |
| ४. | दीप जलाओ और ऋषि ..... | महात्मा वेदभिक्षु | ९ |
| ५. | अपराजेय योद्धा-महर्षि दयानन्द | डॉ. रघुवीर वेदालंकार | १० |
| ६. | हे ऋषिवर! तुम्हें मेरा..... | अरूणा सतीजा (टंकारा श्री) | १२ |
| ७. | आओ दीप जलाएँ ..... | डॉ. शिवदत्त पाण्डेय | १३ |
| ८. | मन को बदलना..... | स्वामी विष्वङ् | १४ |
| ९. | काव्य जगत | | १६ |
| | १. वहीं पूज्य गुरू है.... | पं. प्रकाशचन्द्र 'कविरत्न' | |
| | २. ऋषिवर दयानन्द | श्रीमती सावित्री देवी "प्रभाकर" | |
| | ३. जूझ कर | डॉ. पूर्णिमा वर्मा | |
| १०. | तुम हिन्दू हो..... | प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' | १८ |
| ११. | आर्य जगत के समाचार | | १९ |
| १२. | सभाक्षेत्र के समाचार एवं सूचनाएं | | १९ |


टीप - प्रकाशित कृतियों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं इनसे 'आर्य सेवक' का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

# १३१ वें निर्वाण दिवस पर महर्षि को शत शत नमन

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्मरण कर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार करने का अवसर समुपस्थित है । एक ऐसा व्यक्ति जिसके प्रति दिग् दिगन्त से विद्वानों, राजनीतिज्ञों, समाज सुधारकों ने जो श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं वे सब इतिहास की अमूल्य धरोहरे हैं । उनके विचारों की विलक्षणताओं को हम पढ़ते हैं, सुनते हैं व देखते हैं ।

इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध आर्य साहित्यकार डा. भवानी लाल भारतीय की निम्न पंक्तियां अवलोकनीय हैं–

'वस्तुतः दयानन्द जैसे आध्यात्मिक साधना के सर्वोच्च सोपान पर प्रतिष्ठित योगी, ध्यान, कर्म एवं उपासना के गूढ़तम रहस्यों के ज्ञाता महापुरूष का लोक कल्याण हेतु अपने को विसर्जित कर देना इस देश के इतिहास की अभूतपूर्व घटना थी । तभी तो गंगा तटवर्ती प्रान्त के निवासी एक महात्मा ने जब उनसे कहा कि यदि आप लोकोपकार के जंजाल में न पड़कर मोक्ष साधना में तत्पर होते, तो इसी जन्म में आपको मुक्ति लाभ प्राप्त हो जाता । इसके उत्तर में स्वामी जी ने जो कुछ कहा वह उनके जैसे उदात्त व्यक्तित्व वाले लोक मंगल विधायक युग पुरूष के सर्वथा ही था । उन्होंने कहा–

मुझे अपनी मुक्ति की चिन्ता नहीं है । दयानन्द के नेत्र उस दिन को देखना चाहते हैं जब देश के लाखों करोड़ों निवासी अज्ञान, अविद्या तथा अंध-विश्वासों की कारा से मुक्त होगें तथा दैन्यदारिद्य शोषण, अभाव तथा पराधीनता के पाशों को छिन्न भिन्न कर सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति कर लेंगे लोक कल्याण के लिए ब्रह्मानन्द को ठुकराने वाले ऐसे लोकोत्तर पुरूष मानव जाति के प्रणम्य है ।'

यह है महर्षि के जीवन दर्शन की एक झांकी ।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जो आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान के कुछ विचारों की ओर दृष्टिपात करना उपयुक्त होगा । आपने लिखा ''महर्षि दयानन्द का जन्म तो संसार को शान्ति प्रदान करने के लिए हुआ था ।'' स्वामी दयानन्द के जीवन का मुख्य उद्देश्य समस्त मनुष्य समाज के जीवन को उच्च बनाना था । 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'.....महान आत्माएं सारे संसार को ही अपना कुटुम्ब मानती हैं । वे संसार के लिए जन्म लेती है, संसार को उन्नति शील बनाती हैं । महर्षि दयानन्द का जन्म भारत में हुआ था अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि भारत को उनके अभ्युदय से लाभ पंहुचा । भारत ही विशेष रूप से उनका कार्य क्षेत्र रहा यद्यपि उनकी इच्छा थी कि संसार के अन्य भागों की भी यात्रा करें परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने देश में अज्ञान अंधकार के दर्शन किए । उनको चारों ओर अज्ञान दिखाई देता था इस लिए उन्होंने सारी शक्ति यहीं लगा दी । स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज ही स्थापना करके अपने विश्वव्यापी उद्देश्य की ओर संकेत किया है । पं. उपाध्याय जी आगे लिखते है– 'स्वामी दयानन्द ने जब होश संभाला तो देश शारीरिक और मानसिक दासता में जकड़ा पाया । दासता की पूर्णता मानसिकता से होती है' पंडित जी ने मिस मेयो को उद्धरित करते हुए 'हिन्दुओं को देवताओं का गुलाम बताया ।' परिणाम हुआ देश जाति का इतना अधः पतन कर दिया था कि राष्ट्र निर्माण का कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता था।'' श्री उपाध्याय जी आगे लिखते है ''स्वामी दयानन्द जी उस मनोवृत्ति को दूर करने के लिए दो बातें खोज निकाली प्रथम तो यह कि आर्य लोग भारत वर्ष के असली निवासी हैं ।.....(और दूसरा) स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में स्थान-स्थान पर मनुस्मृति और अन्य ग्रथों के प्रमाण देकर यह बताया कि भारत के लोग किसी युग में विज्ञान जानते थे और नए नए आविष्कार करते थे ।''

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द ने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर कितना कुठाराघात किया वह सर्व ज्ञात ही है । परिणाम है कि सारे झंझावातों से समाज में परिवर्तन आया और देश ने करवट बदली । महर्षि के निर्वाण के उपरान्त लाला लाजपतराय, महात्मा मुंशीराम आदि आर्य समाजी ने नेताओं के द्वारा अथक प्रयास किए । अन्य सामाजिक व राजनैतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं के प्रयासों का यह सुफल हुआ कि कालान्तर में देश स्वतत्रंता के प्रकाश को देख पाया ।

स्वामी जी पैनी दृष्टि सामाजिक कमजोरियों तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शोषितों अथवा पीड़ितों के द्वारा अनुभूत कष्टों की ओर थी। वे उनकी वेदनाओं से भलिभांति परिचित थे तथा उस से परित्राण दिलाने के लिए चिन्तित भी । इस दृष्टि से आर्य समाज के गंभीर साहित्य सृजक पं. क्षितिश जी वेदालंकार द्वारा लिखी गई निम्न पंक्तियां अवलोकनीय हैं ।

गंगातट पर विचर रहे एक साधु से स्वामी जी के साथ वार्तालाप का उद्धरण करते हुए वे लिखते है 'इतने त्यागी परम हंस अवधूत होकर आप जटिल जंजाल में क्यों उलझे हुए हो ? निर्लेप होकर क्यों नहीं विचरते? हम तो सब कुछ करते हुए भी निर्लेप हैं ।... प्रजा प्रेम से प्रेरित हो कर यह सब ही करनी उचित है । साधु जी ने कहा– कि प्रजा प्रेम का नया बखेड़ा क्यों डालते हो ? कहा आत्मा से प्रेम करो जिसके लिए श्रुति पुकार रही है । उस समय आपने मैत्रयी और याज्ञवल्क संवाद के वाक्य भी बोले । उस पर स्वामी जी ने कहा क्या अपने उन बंधुओं का चिन्तन भी किया है जो आप के देश में लाखों की संख्या में भूख की चिता पर पड़े हुए रात दिन बारहों महीने भीतर ही भीतर जल कर राख हो रहे हैं । हजारों लोग ऐसे हैं जिन्हें पेट भर अन्न नही मिलता । उनके तन पर सड़े–गले मैले कुचैले चिथड़े लिपट रहे हैं । ऐसे कितने हो दीन दुखिया भारत वासी हैं जिनकी सार संभार कोई भूले भटके भी नहीं लेता । बहुतेरे कुसमय में राज मार्गों में पड़े–पड़े पांव पटक कर मर जाते हैं परन्तु उनकी बात तक पूछने वाला कोई नहीं मिलता । महात्मन्, यदि आत्मा से विराट् परमात्मा से प्रेम करना है तो अपने अंगों की तरह सब को अपनाना होगा । अपनी भूख मिटाने की तरह उनकी भी चिन्ता करनी होगी । सच्चा परमात्मा प्रेमी किसी से घृणा नहीं करता । वह उंच नीच की भावना को त्याग देता है । उतने ही पुरूषार्थ से दूसरे के दुख मिटाता है, कष्ट क्ले काटता है, जितने से वह अपने काटता है । ऐसे ज्ञानी जन ही वास्तव में आत्म–प्रेमी कहलाने के अधिकारी हैं । यह सुनकर वह साधु स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा ।''

यह थी स्वामी जी की लोक कल्याण की चिन्ता तथा भविष्य के कार्य की योजना ।

विस्तार भय से यहीं हम अपनी बात समाप्त करते हैं।

पर हां एक बात और समापन में । दीपावली के अवसर पर हम दीपों की अवली बनाते हैं । तम सो मा ज्योर्ति गमय असतो मा सद्गमय । क्या हम अपने संगठन के प्रति निष्ठा रखते हैं? क्या असत से सत की और जाने के लिए हम इमानदारी से बढ़ रहे हैं । क्या जीवन में तम से ज्योति की ओर हम वास्तव में चल रहे हैं । क्या हम दीपक में स्नेह डाल रहे हैं । स्नेह से तात्पर्य केवल तेल से ही नहीं अपितु प्रेम से भी लेना होगा । क्या एक कैम्प से दूसरे कैम्प में स्नेह भरा दीपक भिजवा कर वास्तव में तमस से प्रकाश की ओर असत से सत की ओर बढ़ने का साहस करेगें ।

जयसिंह गायकवाड़

.....***.....

thearyasamaj.org

# स्वामी दयानन्द की विलक्षणता

डॉ. धर्मवीर

समाज में जो लोग कुछ नया करते हैं उनका व्यक्तित्व औरों से पृथक् होता है। यह पृथकता सामान्य लोगों से कुछ न कुछ जुड़ी रहती है। इसमें ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व पर विचार करें तो उनका व्यक्तित्व न केवल औरों से हटकर है अपितु विलक्षण है। उनके जीवन में छोटे से लेकर बड़े कार्य तक विचार करने पर अभूतपूर्व लगते हैं। आप के विचार और व्यवहार में जहाँ गहरी बौद्धिकता पाते हैं वहीं धर्म के प्रति निष्ठा भी उतनी ही दृढ़ है। प्रायः देखा जाता है जो व्यक्ति अपने को बुद्धिजीवी समझते हैं वे किसी अंश में धर्मद्वेषी हो जाते हैं। इसके विपरीत जो अपने को धार्मिक मानते हैं उनकी बुद्धि से दूर का भी सम्बन्ध देखने में नहीं आता। ऋषि दयानन्द का व्यक्तित्व इन दोनों से विलक्षण है।

आजतक जितने भी विद्वान्, धर्माचार्य, समाज सुधारक हुए हैं सभी का अपने स्थान से सम्बन्ध बना रहा है। वे अपने स्थान के कारण ही जाने पहचाने जाते हैं। ऋषि दयानन्द यहाँ भी विलक्षणता लिए हुए हैं। अपने उनसठ वर्ष के जीवन में वे सतत् यायावर बनकर ही रहे हैं। घर छोड़ने के पश्चात् वे लम्बे समय तक अपने अध्ययन काल में मथुरा में गुरू विरजानन्द जी के पास प्रायः अढ़ाई-तीन वर्ष रहे हैं। उस मथुरा से भी उनके जीवन में कोई लगाव या मोह दिखाई नहीं देता। मथुरा से निकल कर मृत्यु पर्यन्त वे भ्रमण ही करते रहे हैं। कहने को उनके पास अपना पुस्तकालय था, अपना प्रेस था, प्रकाशन और विक्रय का कार्य भी निरन्तर चलता रहता था परन्तु कोई स्थान स्वामी दयानन्द का अपना नहीं बन सका। देश के विशाल भूभाग पर वे अपने पुस्तकालय व सेवकों के साथ ही भ्रमण करते रहे। उनका घर सदा उनके साथ रहा। ऋषि के जीवन में एक बड़ी मार्मिक घटना आती है। स्वामी जी ने बहुत सारी छपी पुस्तकें अपने भक्त मास्टर सुन्दरलाल जी के घर पर रखवा दी। मास्टर जी ने अपने घर से पुस्तकें मंगाने के लिए लिखा तो स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया, ''हमारा तो कोई घर है नहीं, आप लोगों का घर ही हमारा घर है, हम पुस्तकें मंगा कर कहाँ रखेंगे। अपने पास ही रहने दीजिये।''

स्वामी जी के शिष्यों व भक्तों में बड़े राजे-महाराजे व सेठ, साहूकार भी थे, वे बहुत बड़े-बड़े स्थान ऋषि को आश्रम मठ बनाने के लिए दे सकते थे परन्तु स्वामी जी के मन में कभी आश्रम या स्थान बनाने की बात नहीं आई। हम उनके पूरे जीवन को अध्ययन करके भी ऐसा नहीं पाते कि उनका किसी स्थान व व्यक्ति से कोई विशेष मोह हो।

ऋषि की यायावरी वृत्ति ने उन स्थानों को ही ऋषि का स्थान बना दिया। स्वामी जी के उत्पन्न होने से टंकारा, स्वामी जी के विद्याध्ययन करने से मथुरा, आर्य समाज की स्थापना करने से मुम्बई और स्वामी जी के बलिदान से जोधपुर और अजमेर स्वयं ही ऋषि के अनुयायी व भक्तों के लिए ये स्थान तीर्थ स्थान बन गये। इसके अतिरिक्त स्वामी जी जहाँ-जहाँ भी रहे, जहाँ उपदेश दिया, समाज सुधार का कार्य किया वे सभी स्थान आज हमारे लिए तीर्थ बन गये हैं। उनके भक्तों का उन स्थानों से मोह है परन्तु ऋषि का उनके जीवन में किसी स्थान से मोह दिखाई नहीं देता।

जैसे स्थान से ऋषि को मोह नहीं वैसे ही किसी व्यक्ति विशेष में भी उनका मोह दृष्टिगत नहीं होता। सभी से उनका स्नेह है जो जितना देश धर्म के लिये सहयोगी है स्वामी जी के लिए वह उतना ही आदर के योग्य। जैसे उन्होंने अपना कोई स्थान नहीं बनाया उसी प्रकार उन्होंने अपना कोई शिष्य भी नहीं बनाया। किसी व्यक्ति का अपना उत्तराधिकारी भी नहीं बनाया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक संस्थायें बनाईं। सामाजिक कार्यों के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। स्वामी जी के विचार और सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व आर्य समाज का है। स्वामी जी ने गो और इस देश की कृषि की रक्षा और उन्नति के लिए गोकृष्यादिरक्षिणी सभा की भी योजना की। अपने प्रेस, प्रकाशन, धन वस्त्र आदि देकर, अपने ग्रन्थों के प्रकाशन, साहित्य का निर्माण, विद्वान्, उपदेशक प्रचारकों को तैयार कर देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तर तक वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना तथा आर्यावर्तीय दीन अनाथों की रक्षा व उन्नति का उत्तरदायित्व परोपकारिणी सभा के नाम कर दिया। उदयपुर में इसकी रचना कर वहीं महाराजा की सभा में उसका पंजीकरण कराया और छः मास बाद ही अपनी जीवन लीला का संवरण कर लिया। धर्म के क्षेत्र में चल रही व्यक्ति पूजा को देखकर उन्होंने व्यक्ति को धर्म का पर्याय और अवतार मानने से इंकार कर दिया। इस विषय में ऋषि दयानन्द इतने आगे थे कि उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

आज तक जिस किसी गुरू ने अपने धर्म, मत, पन्थ चलाया

thearyasamaj.org

वह उस पन्थ का प्रवर्तक बना परन्तु ऋषि ने अपने को किसी मत-पन्थ का प्रवर्तक न बना कर, आदि वैदिक धर्म प्रचारक ही बनना स्वीकार किया। गुरू बनने वालों ने अपने शिष्यों को जानने और सोचने का अधिकार नहीं दिया। जिन गुरूओं के शिष्यों की संख्या लाखों-करोड़ों में है उनका गौरव, उनका बड़प्पन इस कारण बना हुआ है क्योंकि उन्होंने अपने शिष्यों को अपनी बुद्धि के उपयोग का अधिकार नहीं दिया। यही एक रहस्य की बात है कि आप तभी तक बड़े बुद्धिमान हैं जबतक मूर्खों की बड़ी संख्या आपके पीछे चल रही है। यह तभी सम्भव है जब आप विवेक का अधिकार केवल अपने आधीन रखे, सब गुरू, महात्मा, धर्म प्रवर्तक इसी पथ पर चलने का यत्न करते हैं। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द ने विवेक अधिकार को मनुष्य मात्र के मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया है।

स्वामी जी किसी बात को कहने मात्र से स्वीकार कर लेने की सम्मति नहीं देते, वे अपने अनुयायी को एक परीक्षा की कसौटी देते हैं, प्रत्येक विचार को उस परीक्षा जाँचने का आदेश देते हैं। उनकी पाँच परीक्षा इस प्रकार हैं-

**एक-** जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों के अनुकूल हो, वह-वह 'सत्य' और उससे विरूद्ध 'असत्य'।

**दूसरी-** जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह 'सत्य' और जो-जो विरूद्ध है, 'असत्य' है। जो कोई कहे- ''बिना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ'', वह सृष्टिक्रम से विरूद्ध होने से असत्य है।

**तीसरा-** ''आप्त'' अर्थात् जो धार्मिक, विद्वान् सत्यवादी, निष्कपटियों का संग, उपदेश के अनुकूल है, वह-वह 'ग्राह्य' और जो-जो विरूद्ध है, वह-वह 'अग्राह्य' है।

**चौथी-** अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख वा सुख दूँगा, तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

**और पाँचवीं-** आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव से।

सबसे विलक्षण बात है आस्था और धर्म जैसे क्षेत्र में प्रजातन्त्र पद्धति का समावेश करना। प्रायः मनुष्य अपनी श्रद्धा और विश्वास के अनुसार किसी को अपना गुरू बनाता, सभी शिष्य स्वाभाविक रूप से उसके अनुगामी होते हैं गुरू अपने पीछे गुरू की नियुक्ति करता है। परन्तु स्वामी जी धार्मिक संस्था में गुरू परम्परा के स्थान पर प्रजातन्त्र प्रणाली की व्यवस्था के पक्षधर हैं। बहुतों के विचार से यह परम्परा सफल नहीं मानी जा सकती परन्तु मनुष्य की बनाई कोई भी परम्परा क्यों न हो वह शत-प्रतिशत सफल नहीं हो सकती। गुरू परम्परा, राज परम्परा, कुल परम्परा सभी में भी दोष हैं। अतः प्रजातन्त्र प्रणाली में भी दोष हो यह संभव है, यह स्वाभाविक है परन्तु प्रजातन्त्र प्रणाली एक मात्र ऐसी प्रणाली है जिसमें अन्तिम व्यक्ति को प्रथम स्थान पर आने का अधिकार और अवसर उपलब्ध है। अन्य परम्पराओं में योग्यता, गुणों के लिए कोई स्थान नहीं है। इस गुरूडम को दूर करने के विचार ने ही सामाजिक धार्मिक संगठन में स्वामी जी ने प्रजातन्त्र प्रणाली को स्थान दिया। यह स्वामी जी की विलक्षणता है।

स्वामी जी की विक्षणता एक और बात में है, वह है सब को वेद के अध्ययन का अधिकार देना। भारतीय संस्कृति में अध्ययन और वेद भिन्न नहीं हैं। हम अपने बालक का जिस दिन विद्या प्रारम्भ करते हैं उस संस्कार को वेदारम्भ संस्कार कहते हैं। अध्ययन का उद्देश्य मनुष्य जीवन के प्रयोजन को पूर्ण करना है। वह वेद के अध्ययन से सम्भव है। वेद के अनुसार जीवन चलाने से मनुष्य जीवन के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। अतः हमारे जीवन में ओत-प्रोत है उसे किसी मनुष्य से पृथक् नहीं किया जा सकता, किसी मनुष्य को अध्ययन से, विद्या के पढ़ने से, वेदाध्ययन से रोकना इसी प्रकार का अपराध और पाप है जैसे किसी को भोजन या पानी न देकर भूखा-प्यासा मार देना। जिन लोगों को जन्मगत जाति और लिङग के आधार पर विद्या के अध्ययन से, वेद के स्वाध्याय से वञ्चित किया गया था, स्वामी दयानन्द ने उनके अधिकार को लौटाया और उनके शिष्यों में लम्बी परम्परा है जिन्होंने स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ाया। ऋषि ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान बताते हुए जैसे ईश्वर के बनाये हवा, पानी, अन्न, स्थान पर सबका अधिकार माना है उसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान वेद पर भी मनुष्य मात्र का अधिकार घोषित किया है। ऋषि कहते हैं जैसे एक पिता की सम्पति में सभी सन्तानों का बराबर अधिकार होता है उसी प्रकार मनुष्य मात्र का वेद पर समान अधिकार है।

जिन लोगों ने वेद को अपने अधिकार में लेकर शेष समाज को वञ्चित कर दिया था स्वामी जी ने उनके अभेद्य दुर्ग को धराशायी कर दिया। जिन ग्रन्थों और मान्यताओं के आधार पर वेदाध्ययन के अधिकार से लोगों को वञ्चित किया जाता उन सभी तन्त्रग्रन्थों का मिथ्यात्व प्रतिपादन कर उन्हें वेद परम्परा से बहिष्कृत करने की घोषणा कर दी, उन सब ग्रन्थों को अप्रमाण मानकर अमान्य कर दिया जो मनुष्य के अधिकार को सीमित करते थे। जिन प्रमाणिक

thearyasamaj.org

ग्रन्थों में स्वार्थी लोगों ने मिलावट कर दी थी स्वामी जी ने प्रक्षिप्त बताकर निरस्त कर दिया । कसौटी के रूप में जो-जो वेद कहता है और वेदानुकूल है वही मान्य अन्य को अमान्य घोषित कर दिया । वैदिक साहित्य के अतिरिक्त उन वेद भाष्यों को भी स्वामी जी ने प्रमाण कोटि से बाहर कर दिया जो वैदिक सिद्धान्तों से विपरीत आशय रखते थे ।

इस प्रकार के साहित्य की परीक्षा के लिए स्वामी जी को अपने गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से एक कसौटी मिली थी जिसका नाम है आर्ष । जो आर्ष है ऋषि प्रोक्त है, वह ग्राह्य है जो ऋषियों और वेद के मन्तव्य से विपरीत है वह सब अनार्ष होने से त्याज्य कोटि में है । यह आर्ष अनार्ष की कसौटी वेद भाष्य और वैदिक साहित्य की वेदानुकूलता और विरोध को समझने का सबसे बड़ा साधन है ।

ऋषि दयानन्द की एक और विलक्षणता है सब को यज्ञ का अधिकार देना । जैसे जन्मजात ब्राह्मणों ने वेदों को अपनी रूढ़ियों के जाल में बान्ध रखा था उसी प्रकार यज्ञ को भी कठोर रूढ़ियों, अनुचित परम्पराओं और भ्रष्ट कर्मकाण्ड के माध्यम से अपने पञ्जों में जकड़ रखा था उसे ऋषि ने मुक्त कर जैसे वेद पढ़ने का अधिकार सब को दिया उसी प्रकार यज्ञ करने का अधिकार भी मनुष्य मात्र को दिया । स्वामी जी ने यज्ञ को जीवन का अनिवार्य अभिन्न अंग बता कर उसको इतना सहज और सरल कर दिया जैसे किसी मनुष्य का भोजन करना अनिवार्य और सरल कार्य है ।

यज्ञ को पण्डितों ने इतना कठिन बना दिया था कि कोई व्यक्ति यज्ञ-हवन करने की कल्पना भी नहीं कर सकता था । उसका विधि विधान पण्डित दक्षिणा सब मिलाकर केवल यह राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों का होकर रह गया था । यज्ञ के कल्पित फल बताकर और उल्टे-सीधे कार्य कराकर धन लूटना ही यज्ञ का प्रयोजन रह गया था । यज्ञ में हिंसा, व्यभिचार का बोलबाला था । स्वामी जी ने इस जंजाल को जड़ से उखाड़कर फैंक दिया । इस प्रकार यज्ञ को मनुष्य को शान्ति देने वाला, पर्यावरण की शुद्धि करने वाला, ज्ञान-विज्ञान में रूचि उत्पन्न करने वाला सब के करने योग्य कार्य बना दिया । स्वामी जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को कर्मकाण्ड विषयक प्रकरण में एक ऐसा निर्देश दिया है जिससे समस्त यज्ञीय पाखण्ड की जड़ ही उखड़ जाती है । वे लिखते हैं-

**यज्ञ यद् यद् आवश्यकं तत् तत् कर्त्तव्यं नेतरत् ।**

अर्थात् यज्ञ करते हुए यज्ञ को सफल बनाने के लिए जो-जो करना आवश्यक और उपयोगी है वही यज्ञ की विधि है । शेष करने की कोई आवश्यकता नहीं । यज्ञ में समिधा कैसी हो यह बता दिया, साकल्य क्या हो? मन्त्र कौन-से हों? कौन-सी क्रिया करनी है? यह सब बताया जो यज्ञ के लिए आवश्यक है और यज्ञ का प्रयोजन सिद्ध करने के लिये उपयोगी है । परन्तु पाप होगा इस प्रकार के डर से यज्ञ ही छोड़ देने की बात स्वामी जी ने यज्ञ करने वालों के मन से निकाल दी । स्वामी जी ने एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण यज्ञ के सम्बन्ध में अपनाया । रूढ़ि वहीं तक स्वीकार है जहाँ तक वह प्रयोजन सिद्ध करने में सहायक है । ऋषियों ने यज्ञ का उपदेश लोगों की आत्मा जगाने के लिए दिया है । यज्ञ बाहरी के कार्य सांसारिक प्रयोजनों की सिद्धि करते हुए आत्मा को जगाने का उद्देश्य पूरा करते है । यज्ञ एक समूह में किया जाने वाला कार्य है अतः उसमें व्यवस्था व नियमों की आवश्यकता है । यज्ञ की व्यवस्था यज्ञ को अधिक उपयोगी, सुन्दर और सरल बनाती है । यदि यह रूढ़ि पाप का कारण बने तो इसे कौन करना चाहेगा । आचमन दायें हाथ से करने के स्थान पर बायें से करने पर पाप नहीं होता । किसी के दायाँ हाथ है ही नहीं तो बायें से ही करेगा, नियम व्यवस्था सरल सुन्दरता के लिए है पर और पुण्य से इनका कोई सम्बन्ध नहीं । इस प्रकार यज्ञ पण्डितों, शास्त्रों, रूढ़ियों से निकल कर स्वामी दयानन्द की कृपा से सब के लिए हो गया । नियमों का ध्यान रखते हुए स्वामी दयानन्द का प्रमुख नियम यज्ञ सबके लिए इसका ध्यान रखने से जटिलताओं से बचा जा सकता है ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सब उपकारों में दो महान् उपकार हैं, वेद पढ़ने का अधिकार और दूसरा यज्ञ करने का अधिकार । इस प्रकार वेद हमें ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार देता है तथा यज्ञ कार्य के करने का अधिकार देता है । वेद श्रेष्ठ ज्ञान और यज्ञ श्रेष्ठ कर्म के प्रतीक हैं । ऋषि दयानन्द ने मनुष्यों के श्रेष्ठ ज्ञान कर्म से वञ्चित करने वाले बन्धनों को तोड़ कर जो बौद्धिक व कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की इसके लिए पं. लोकनाथ तर्क वाचस्पति की महर्षि महिमा पुस्तक की यह पंक्ति बड़ी सटीक बैठती है-

**सर्वेषाकरूणा विवेकजलधेः**
**स्वामी दयानन्द की ।**

यह स्वामी दयानन्द की दया है हम वेद पढ़ सकते हैं, यज्ञ कर सकते हैं ।

'परोपकारी' से साभार

.....***.....

thearyasamaj.org

# दीप जलाओ और ऋषि दयानन्द को जीवित करो

महात्मा वेदभिक्षु

अँधेरा बहुत गहरा हो चुका है, प्रकाश कहीं दिखायी नहीं देता, मैं ज्योति की एक किरण देखने के लिए उत्सुक हूँ, किन्तु गहन तमस् में शून्य के अतिरिक्त और कुछ भी तो प्रतीत नहीं हो रहा ।

तुम दीपमाला मनाओगे, अपना घर-आँगन दीप पंक्तियों से सजाओगे, फुलझड़ियाँ तुम्हारे मन में उमरेंगी पर मेरी हृदय तो इन सबमें वह नहीं देख पा रहा जिसे देखने के लिए वह व्याकुल है ।

आज गुरुदेव दयानन्द का बलिदान दिवस है । पाचक जगन्नाथ ने घातक बन मेरे गुरु के देह को समाप्त करने का अपराध किया था । उस दिन भी दीवाली थी । किन्तु भौतिक शरीर के त्यागने के बाद भी ऋषि दयानन्द मर नहीं सके । वे जीवित रहे नाना रूपों में, गुरुदत्त, लेखराम, श्रद्धानन्द और बलिदानी शहीदों के रूप में आर्य भाई-बहनों की श्रद्धा में उत्साह के ठाठें मारते जोश में । मेरा मन नहीं मानता कि दीवाली के दिन १८८३ में ऋषि दयानन्द नहीं रहे ।

मैं अपनी आँखों से प्रत्येक दयानन्द भक्त को ऋषि दयानन्द की छाया-प्रतीक रूप में देखता हूँ । जहाँ ऋषि के प्रति श्रद्धा है वहाँ मेरा गुरु जीवित है । इसलिए मैं कहता हूँ कि ऋषि दयानन्द को सर्वत्र जीवित करो ।

मेरा गुरु दयानन्द साधारण नहीं, अनुपम था, वह वह ही था, उसका एक-एक गुण उसकी महत्ता का परिचायक है । वह मनुष्य-मात्र का उद्धारक सचमुच देवता था, ऐसा देवता जिसने सब कुछ दिया, और बदले में पिये विष के प्याले । पर विष के प्याले पीकर भी वह अमर हो गया, उसे कोई मार नहीं सका, वह अजेय था । पर आज कभी-कभी अनुभव होता है कि मेरे गुरु की हत्या हो गई है । अन्तर्मन पूछता है कि किसने मारा दयानन्द को, उत्तर मिलता है ''दयानन्द की जय'' बोलने वालों ने । उन्होंने जो दयानन्द का नाम लेकर नेता बने, ऋषि दयानन्द की हत्या करने का यत्न किया है ।

ये बड़े-बड़े भव्य भवन, ये विशाल संगठन, ये लच्छेदार भाषण देने वाले नेता मेरे गुरु के हत्यारे हैं । यह बात लिखते हुए मुझे कितनी पीड़ा होती है, कौन समझेगा? किसके पास श्रद्धा है, किसके पास हृदय है जो मेरे दर्द का अनुभव कर सके ।

कचहरियों और समाचारपत्रों में लड़कर दयानन्द का नाम लेने वाले इन दयानन्द-भक्तों (?) को आप भले ही क्षमा कर दें किन्तु इतिहास क्षमा नहीं करेगा । नारे लगा कर झूठे आन्दोलन चलाकर, जनता को सब्जबाग दिखाकर इन्होंने ऋषिभक्तों को ठगने के अतिरिक्त आज तक क्या किया है? क्या कर रहे हैं? आज आर्यसमाज के लिए, ऋषि दयानन्द के लिए? कौन पूछे, कौर उत्तर दे, जब सभी भटक रहे हैं ।

दयानन्द के लाखों अनुयायी आज भी जीवित हैं जनमानस में ऋषि के प्रति श्रद्धा का सागर आज भी विद्यमान है । आशा की किरण यही है, और इन्हीं से मेरा मन कहना चाहता है कि दीवाली के दिन ऋषि दयानन्द को पुनः जीवित करो । ग्राम-ग्राम और गली-गली में दयानन्द के गीत गुँजाने का प्रयत्न करो । अपनी शक्ति अपने क्षेत्र में केन्द्रित करो और दयानन्द का प्रकाश फैलाने में लग जाओ । सत्यार्थ प्रकाश, ऋषि जीवन और वेद हमारे अस्त्र बनें । इनके द्वारा हम विजय करें, ज्योति बिखेरें ।

मैं चाहता हूँ कि सारा आर्यसमाज अब केवल एक आन्दोलन चलाये-''वेद-प्रचार-आन्दोलन''। हम सब कुछ भूल जायें और याद करें वेद को । उस वेद को, जिसे हम अपना धर्म-ग्रन्थ मानते हैं ।

हमें बढ़ना है, जीवन के अन्तिम क्षण तक और चलते जाना है, जीवन में हम वह दिन देख सकेंगे जब सर्वत्र ऋषि दयानन्द की जय-जयकार सुनाई देगी ।

निराशा की इन घड़ियों को आशा-प्रकाश ज्योतित करने हेतु दीप जलाओ ऋषि भक्तो! दीपावली के दिन आत्म निरीक्षण कर हृदय मन्दिर का पवित्र कर वहाँ 'ज्ञान-दीप' ज्योतित करो । मन और मस्तिष्क का अँधेरा भगाने के लिए दीपावली से अधिक पवित्र दिन और कौन-सा होगा?

आर्यसमाज के भवनों को ऋषि की भावना और वेद-ज्योति से जगमगाओ । श्रद्धा की प्रेरणा और प्रभु का प्रकाश हमारे धर्मस्थान में तेजपुंज बन कर प्रकटे । हमारा जीवन देख अन्यों को प्रकाश मिले । अपने कर्म से धर्म को जीवित करो । अपने प्राण से ज्ञान को गति दो। एक बार सारे ढाँचे को दयानन्दमय कर दो । फिर देखो, इस धरती से अँधेरा कैसे भागता है?

घातक जगन्नाथ के साथी मत बनो! मेरे भाई, याद करो वह दीवाली की शाम, जब गुरुदेव दयानन्द ने अपने प्राण छोड़ते हुए तुम्हें प्रभु इच्छा पूर्ण करने का आदेश दिया था । तुम उस दृश्य को मन की आँखों से देखो । देखो तो सही, आज भी तुम्हें ऋषि का सन्देश गूँजता सुनाई देगा ।

**''प्रभु आज्ञा का पालन करो । प्रभु के मार्ग पर चलो!**
**सभी को चलाओ! वेद-ज्ञान प्रकाश फैलाओ!''**

यदि आत्मा की पुकार में बल है, यदि ऋषि दयानन्द नाम है उस देवता का जो सत्य का प्रतीक है तो उसे-मेरे गुरु को, कोई मार नहीं सकता । न जगन्नाथ पाचक, न नेता । देवदयानन्द अमर हैं, उनकी अमरता उनके सन्देश प्रसार में निहित हैं ।

दीवाली के दिन मैं तुमसे दयानन्द का सन्देश फैलाने का व्रत लेने की प्रार्थना कर रहा हूँ । मैं तुमसे याचना कर रहा हूँ सारे द्वेष-भाव समाप्त करने की । मैं तुम्हें पुकार रहा हूँ दयानन्द का प्रकाश फैलाने के लिए ।

आप घर में दीपक जलाते हुए यह न भूलें कि धरती पर अभी बहुत अँधेरा है । यह अँधेरा है । यह अँधेरा मिटाने और ज्ञान-दीप जलाने के लिए जो भी कर सकते हो, कीजिए ।

दयानन्द का काम पूरा कने का, दयानन्द के दिखाये मार्ग पर चलने का, 'वेद' प्रकाश सर्वत्र फैलाने का व्रत लेकर ऋषि दयानन्द को जीवित कीजिये ।

'जनज्ञान' से साभार

.....***.....

thearyasamaj.org

# अपराजेय योद्धा-महर्षि दयानन्द

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

दयानन्द केवल धर्मोपदेष्टा न था, न ही केवल समाज सुधारक या वेद प्रचारक था। दयानन्द एक संग्राम का योद्धा था। वह संग्राम भी विचित्र था-**एक ओर पूरा आर्यावर्त, उनके दिग्गज विद्वान?? तो दूसरी ओर अकेला दयानन्द !!**

इतना ही नहीं, वह ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध भी लड़ा। उसने राजनैतिक मोर्चा भी सम्भाला। अपने लेखों एवं भाषणों में सर्वदा ब्रिटिश शासन की समाप्ति की बात कही। न केवल कही ही, अपितु १८५७ **के स्वातन्त्र्य समर में क्रियात्मक योगदान भी गुप्त रूप से दिया,** ऐसा भी कहा जाता है। यह गलत भी नहीं है क्योंकि दयानन्द का गुरू तो सचमुच क्रान्तिपुञ्ज ही था। वह नाम से ही प्रज्ञाचक्षु नहीं था अपितु अपनी विमलप्रज्ञा के द्वारा **८० वर्ष का वृद्ध होने पर भी राजाओं- महाराजाओं में अंग्रेजी राज्य का उखाड़ फेंकने के बीज बो रहा था।** साथ ही वह आर्य विद्या का उद्धारक तथा व्याकरण का सूर्य भी था। **दयानन्द में उसके गुरू की ये तीनों ही विशेषताएं समाविष्ट हो गयी थीं।**

*गुरूवर विरजानन्द की भान्ति ही दयानन्द भी क्रान्ति दूत था। वह वीरत्व की साक्षात् मूर्त्ति था। वह परम ईश्वर विश्वासी था तथा सत्य एवं ब्रह्मचर्य ने तो मानो साक्षात् दयानन्द के रूप में ही शरीर धारण कर लिया था। वह परम योगी भी था। इन गुणों के आधार पर ही वह, जीवन संग्राम में अकेला ही डटा रहा। उसके उक्त गुण ही उसकी सेना थे। इनके बल पर ही उसने संग्राम का चहुं ओर मोर्चा खोल दिया, विजय शंख फूंक दिया।*

यह संसार युद्ध स्थली ही है। बड़े-बड़े युद्ध राज्यों की प्राप्ति के लिए ही किये जाते हैं। महाभारत के धर्मयुद्ध में भी भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा था-

**'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।'**

अर्थात् युद्ध में मरने पर तुम्हें स्वर्ग मिलेगा तथा विजयी होने पर राज्य की प्राप्ति होगी। दयानन्द के सामने ऐसा कोई प्रलोभन न था। **उसने तो इस युद्ध के लिए अपने मोक्ष सुख तक को भी छोड़ दिया था। दयानन्द का युद्ध सत्य के प्रचारार्थ था, आर्य विद्या के प्रचारार्थ था तथा पाखण्ड के गढ़ को ध्वस्त करने के लिए था** इसीलिए उसने अपने **लेखन सर्वस्व पुस्तक का नाम** सत्य-अर्थ-प्रकाश **'सत्यार्थ प्रकाश'** रखा।

युद्ध में दो सेनाएं आमने-सामने होती हैं, किन्तु यहां तो **एक ओर** पूरा भारत, उसमें फैले विविध मत मतान्तर, मठाधीश, दिग्गज विद्वान्, धर्म के नाम से प्रचलित विविध पाखण्ड एवं पाखण्डी थे तो दूसरी ओर दयानन्द अकेला ही था। **इतना ही नहीं,** अपितु धर्म के नाम पर सुदृढ़ ईसाई तथा मुस्लिम सम्प्रदाय भी उसके विरोध में थे।

***अंग्रेजी सरकार दयानन्द की स्वदेश भक्ति एवं अंग्रेजी राज्य के विरोध के कारण उसे बागी-विद्रोही घोषित कर ही चुकी थी। दयानन्द ने इन सबका मुकाबला अकेले ही किया था। उसने लिखकर, बोलकर तथा क्रियात्मक रूप में भी इन सबका सामना किया।***

वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने अंग्रेजी न्यायव्यवस्था पर भी प्रश्न उठाया था कि यदि कोई गोरा काले (भारतीय) को मार दे तो उसे उचित दण्ड नहीं दिया जाता। दयानन्द ने सरकार के नमक कानून का भी विरोध किया था कि गरीब जनता पर नमक टैक्स लगाना उचित नहीं। **दयानन्द ने धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया, उन्हें जड़ से उखाड़ने का यत्न किया।**

इस महासमर में, दयानन्द के हाथ में एक ही शस्त्र था तथा वह था वेद। **यही उसका सुदर्शन चक्र था। सामने कोई भी शत्रु टिक नहीं सकता था।** इसी प्रकार **वेदपाणि दयानन्द के सामने कोई भी नहीं टिक पाया।** उसका यह सुदर्शन चक्र अजेय था। भारतीय जनता यहां तक कि धुरन्धर विद्वान भी इसे भूल चुके थे। इस पर धूल की पर्त जम गयी थी तथा कहा जा रहा था कि वेदों को तो शंखासुर चुरा कर ले गया। **दयानन्द ने तभी अपने झोले में से वेद की पोथी दिखला कर कहा कि-** 'तुम्हारे आलस्य रूपी शंखासुर का वध करके मैंने ये वेद जर्मनी से मंगाया है।'

दयानन्द! भारत की यह निधि विदेश पहुंच गयी थी। जहां पर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा उसकी बखिया उधेड़ी जा रही थी। इस वेद विद्या पर नाना प्रकार के **आक्षेप किये जा रहे थे। यथा-**वेद लम्बे समय तक संग्रह किये गये गड़रियों के प्रेमालाप ही हैं। इनमें सुरापान-मांस भक्षण बहुदेववाद तथा यज्ञों में गोवध आदि का विधान है। दयानन्द के सामने भी यह सब कुछ आया **किन्तु** वह सामान्य मनुष्य नहीं था। **वह एक ऋषि था, उसके मेधा बुद्धि थी।** यास्क कहते हैं- **ऋषयो दर्शनात्। स्तोमान् ददर्श इत्यौय मन्यवः।** अर्थात् तत्ववेत्ता को ऋषि कहते हैं। सामान्य व्यक्ति तो किसी भी पदार्थ या घटना को उपरि सतह तक ही देखता है। किन्तु ऋषि उसके वास्तविक परोक्ष स्वरूप को भी पहचान लेता है। वेद मन्त्रों के वास्तविक अर्थों

thearyasamaj.org

को भी ऋषि बुद्धि थी, तभी तो उसने धर्म तथा ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को जाना । उसने यह भी समझ लिया कि वेद विद्या के लोप होने से ही यह सब कुछ पाखण्ड, अनाचार, अत्याचार तथा विविध प्रकार के भ्रम जनता में फैल रहे हैं । उसने देखा कि- **'वेदों के वास्तविक अर्थ तथा वेदों का सच्चा स्वरूप वह नहीं है जो कि सायणाचार्य आदि भारतीय तथा अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने प्रस्तुत किया है ।'** दयानन्द ने वेदों को ऋषियों पर सृष्टि के आदि में प्रकट होने वाला ज्ञान कहा । उसने घोषणा की कि **वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है, उनमें ज्ञान-विज्ञान भरा है । तथा वे व्यक्ति सर्वविध के लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति करने वाले हैं ।**

योद्धा दयानन्द के युद्ध के कई क्षेत्र थे । वह **अकेला ही इन सभी मोर्चों पर लड़ा तथा विजयी रहा ।** धार्मिक पाखण्ड विनाश के लिए उसने **हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़ दी ।** नया नाम था तथा नया ही काम था हम जो एक अकेला कौपीनधारी दयानन्द नामक साधु कर रहा था । **इससे पहले किसी ने भी ऐसा नहीं सुना था ।**

उसने सामाजिक क्षेत्र में प्रस्तुत कुरीतियों पर भी प्रहार किया। **अछूतों को भी आर्य कहा । स्त्री तथा शूद्रों के लिए शिक्षा तथा वेद के द्वार खोले ।** स्वामी जी की इस दूर दृष्टि पर चकित होकर तब सत्यव्रत सामश्रमी नामक वेद के विद्वान ने कहा था- **'शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षाद् वेदवचनमपि प्रदर्शितं स्वामीदयानन्देन** अर्थात् शूद्रों के वेदाधिकार में स्वामी दयानन्द ने साक्षात् वेद मन्त्र **'यथेमां वाचं कल्याणी आवदानि जनेभ्या'** भी उपस्थित कर दिया । इससे पूर्व शंकराचार्य से लेकर तब तक के किसी भी विद्वान का ध्यान इस मन्त्र की ओर नहीं गया था । यही अवस्था स्त्री शिक्षा एवं उनके वेदाधिकार की थी । **वेद तो क्या स्त्रियों को सामान्य शिक्षा का भी अधिकार नहीं था ।** दयानन्द ने गार्गी-घोषा-अपाला आदि का उदाहरण देकर कहा कि स्त्रियों भी पुरूषों के समान ही मन्त्रों की द्रष्टी ऋषिकाएं होती थीं । इस विषय में उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द्र लिखते हैं कि-**'स्त्रियों को दयानन्द का चिर कृतज्ञ रहना चाहिए कि उसने स्त्रियों की मुक्ति का द्वार खोल दिया ।'**

*इस सबके साथ दयानन्द ने उस प्रबल आंधी से भी लोहा लिया जो सम्पूर्ण भारत को अपनी चपेट में ले रही थी। वह आंधी ईसाईयत, इस्लाम तथा पश्चिमी सभ्यता की थी। क्रान्तिकारी लाजपतराय के पिता नमाज पढ़ते थे, रोजे रखते थे तथा इस्लाम स्वीकार करने मस्जिद में जा भी पहुंचे थे किन्तु बच गये ! ईसाई प्रचारक हिन्दू धर्म की कमियां निकाल कर लोगों को धड़ाधड़ ईसाई बना रहे थे । दूसरी ओर, पश्चिमी सभ्यता भारत में सुरसा के मुख की भान्ति फैलती जा रही थी । दयानन्द इन आंधियों के सामने न केवल डटा ही, अपितु उसने इनकी गति को धीमा भी कर दिया ।*

इस विषय में पीर मुहम्मद यूनिस नामक मुस्लिम विद्वान लिखते है- ''ईसाईयत और पश्चिमी सभ्यता के मुद्रक हमलों में हिन्दी-स्तुतियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है ।''

अतीत को दखें तो पता चलता है कि- **बड़े-बड़े समाज सुधारक तथा धर्म प्रचारक राज्य का आश्रय लेकर ही आगे बढ़ते हैं ।** यथा-महात्मा बुद्ध तो स्वयं एक राजकुमार ही थे इस कारण भी उन्हें अपने अभियान में पर्याप्त सफलता मिली । इसके पश्चात् सम्राट् अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार करके अपने पुत्र **महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को विदेशों में बोद्ध धर्म के प्रचारार्थ भेजा ।** इसके शंकराचार्य को सुधन्वा राजा ने बौद्ध मत के निराकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया । जिससे बौद्ध धर्म के स्थान पर अद्वैतमत की स्थापना हो गयी । **मुहम्मद तो इस्लाम के प्रचारार्थ स्वयं हाथ में तलवार लेकर लड़े थे** तथा उन्होंने इसे जेहाद-धर्मयुद्ध घोषित किया था । अंग्रेजी काल में भारत में **ईसाई के प्रचार-प्रसार में अंग्रेजी राज्य का पर्याप्त सहयोग एवं योगदान रहा ।**

महर्षि दयानन्द को इस प्रकार का राज्याश्रय प्राप्त नहीं था । इतना ही नहीं, अपितु **अनेक राजा तो महर्षि दयानन्द के कार्य में विघ्न उपस्थित करते थे तथा उनके प्राण लेने पर भी उतारू रहते थे ।** राव राजा तेज सिंह ने स्वामी जी पर अपनी तलवार से वार किया ही था जिसे स्वामी जी ने निष्फल कर दिया था ।

काशी शास्त्रार्थ में काशी राज स्वयं शास्त्रार्थ के मध्यस्थ थे तथा उन्होंने ही पक्षपात से काशी के पण्डितों को विजयी घोषित किया क्योंकि राजा स्वयं ही मूर्तिपूजक थे । इस प्रकार, दयानन्द अपने प्रचार में राज्याश्रय तो क्या जनता के समर्थन से भी प्रायः अछूते ही रहे । पुनरपि उस वीर योद्धा ने सभी मोर्चों पर अपना संग्राम जारी रखा । **उस निर्भीक योद्धा ने हुंकार भरी अंग्रेजी शासन के विरूद्ध कि स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि है ।** अतः अंग्रेज जल्दी से जल्दी भारत को छोड़ दें । इतना ही नहीं अपितु उसने तो भारत के चक्रवर्ती साम्राज्य की भी कल्पना की ।

दयानन्द ने कहा वेदज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर की ओर से ऋषियों का दिया गया ज्ञान है । अतः स्वतः प्रमाण, पूर्णतः विज्ञान सम्मत है । इस प्रकार उस निर्भीक योद्धा ने इन सभी मोर्चों पर अंगद के समान ऐसा पैर जमाया कि जिसे हटाने का साहस किस ने नहीं किया ।

.....***.....

thearyasamaj.org

# हे ऋषिवर ! तुम्हें मेरा शतबार प्रणाम

अरूणा सतीजा (टंकारा श्री)

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती को १३० वें (यह गत वर्ष प्रकाशित लेख है ।) महानिर्वाण दिवस के अवसर पर उन्हें शत शत नमन करती हुई श्रद्धापूर्वक श्रद्धा रूपी सुमन उन के चरणों में सादर समर्पित करती हूँ । भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि पुनः इस भारत की पावन धरती पर ऐसी परम, पवित्र आत्माएं अवतरित होती रहें ।

महर्षि के अनुसार वह ईश्वर इच्छा से इस धरती के आंचल में आये और ईश्वर इच्छा से उस परम पिता परमात्मा की ज्योति में विलीन हो गये । 30 अक्टूबर 1883 ई. सायं काल की गौ धूली बेला में स्वामी जी ने क्षौर कर्म कराया बैठ कर ईश्वर का ध्यान किया वेदपाठ करने के पश्चात सब को अपने पीछे खड़ा कर प्राणायाम किया फिर करवट से लेकर यह शब्द बोले ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तू ने अच्छी लीला की'' एक महा दीपक, लाखों-लाखों लोगों के हृदय में वेदज्ञान की ज्योति जगा कर संसार को आलोकित कर सूर्य-अस्त के साथ सदा-सदा के लिये बुझ गया । महर्षि दयानन्द के निर्वाण के बाद जो दीप जले उन में आर्य समाज के प्रति बहुत तड़प थी । उनके निर्वाण ने नास्तिक गुरूदत को आस्तिक बना दिया । स्वामी जी की मृत्यु का दृश्य देख कर वह चिल्ला उठे । यह सत्य है कोई महान अदृश्य शक्ति है जिसे संसार के लोग परम पिता परमात्मा के नाम से जानते हैं । जिसे महर्षि ने उस का मुख्य नाम 'ओ३म्' है । इसी 'ओ३म्' नाम का, महर्षि जन-जन को साक्षात्कार कराना चाहते थे ताकि घोर अन्धकार में भटक रही आत्माएं जीवन के सत्य-पथ पर चल सकें ।

उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोक कल्याण में आहूत कर दिया। राष्ट्र प्रेम के सामने उन्हें मोक्ष भी तुच्छ नजर आया । एक महन्त के कहने पर कि तुम 18-18 घण्टे की समाधि ले सकते हो तो मोक्ष के हकदार हो । स्वामी जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया जब मेरे देशवासी लाखों की संख्या में दारूणता के डंक को झेल रहे हैं तो मैं अकेला मोक्ष को कैसे स्वीकार कर सकता हूँ ।

उन्होंने बताया कि जीवन का अन्तिम लक्ष्य मुक्ति है । मुक्ति या मोक्ष को प्राप्त करने के किसी कठोर तप तथा गृहस्थ को छोड़ने की आवश्यकता नहीं । मोक्ष का सम्बन्ध आत्मा से है न कि शरीर से । आत्मा की पवित्रता मोक्ष का मुख्य द्वार है जिसे गृहस्थ में रह कर भी प्राप्त किया जा सकता है । परोपकार की एक-एक सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं । ईश्वर स्वयं भी तो हर पल यही 'कर्म' ही तो कर रहा है । वह अपना प्रतिबिम्ब हर मानव में देखना चाहता है ।

मानव जीवन ईश्वर का दिया एक अनमोल उपहार । जिन्दगी को जीना सीखे । जिस को जीना आ गया उस का लोक तथा परलोक सुधार गया । यही जीवन कला तो, महर्षि समझाने व सिखलाने आये थे ।

**'हे मानव एक दिन भी जी, अटल विश्वास बन कर जी कल नहीं तू जिन्दगी का आज बन कर जी''**

इसी उद्देश्य से उन्होंने वेदों का पुनरूद्धार किया । वेदों की ओर लौट चलो का आह्वान किया ।

वेदों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना-सुनाना तथा आचरण करना सब आर्यों के लिये अनिवार्य बताया । समाज में व्याप्त सभी बुराईयों को जड़ से उखाड़ फेंका । देश को स्वराज्य का नाम दिया । नारी तथा अछूतों का उद्धार कर देश को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया । संक्षेप में महर्षि क्या थे । एक वाक्य में वह सब थे जो कोई दूसरा नहीं था।

वह सच्चे योगीराज, वेदज्ञ, अखण्ड बह्मचारी, देश का भक्त, निर्भीक, गुरूभक्त, परोपकारी, सत्यवादी तथा दयालुता की प्रतिमा थे महर्षि गुणों की खान थे, सद्गुणों ने उन्हें अपना निवास स्थान बना रखा था वह सद्गुणों के संगम थे ।

महापुरूषों का जीवन वह दीप्तिस्तम्भ है जो राह से भटके लोगों को कुमार्ग से हटा कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं । उन के पावन देहावसान के अवसर पर संकल्प करें कि उन के निर्देशानुसार सच्चे मानव बनने का प्रयत्न करेगें जो समय की मांग है । आज आर्य समाजियों की वस्तु-स्थिति पर व्यंग करते हुए किसी ने सही लिखा है-

**सूक्त संगठन के पढ़ के बिखरते रहे ।**
**पाठ शान्ति का पढ़ के झगड़ते रहे ।**
**गैर को न अपना बना हीं सके ।**
**अपनों से बिछुड़ने से क्या फायदा ।।**

प्रति वर्ष दीपावली पर्व आता है और चला जाता है परन्तु महर्षि का निर्वाण दिवस जन जीवन में नव ज्योति का संचार कर जाता है । इसे स्वीकार करें । यही होगी उस महामानव को सच्ची श्रद्धांजली ।

.....***.....

thearyasamaj.org

# आओ दीप जलाएँ

डॉ. शिवदत्त पाण्डेय

इस संसार सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में दीपावली की तैयारियाँ हो रही हैं । जनमानस दीप पर्व को मनाने में सोल्लास रत हैं । ऐसे समय में इस पर्व को मनाने के कारणों, लाभों व हानियों पर विचार करना मनुष्य होने के नाते आवश्यक प्रतीत होता है । क्योंकि मनुष्य का मतलब है **'मत्वा कर्माणि सींव्यति'** अर्थात् जो विचार करके कर्मों को करता है । आइए विचार करें कि हमें दीपावली क्यों मनानी चाहिए? इसका लाभ क्या है तथा इसके साथ क्या-क्या भावनाएँ जुड़ी हुई हैं?

किंवदन्ती है कि विजयादशमी को रावण पर विजय करने के उपरान्त जब राम देवी सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आये थे तो उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने घर-घर में दीप जलाये थे । तभी से हम दीपावली मनाने लगे हैं । वस्तुतः इतिहास के आलोक में जब हम इस किंवदन्ती की परीक्षा करते हैं तो यह घटना तर्क के आधर पर सत्य सिद्ध नहीं होती है ।

वैदिक संस्कृति के प्राणतत्व हैं कृषि, ऋषि और यज्ञ । हम ऋषि परम्परा अवलम्बन करते हुए यज्ञ की सिद्धि के लिए कृषि करते हैं और हमारा मूलमन्त्र है **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अर्थात् हे प्रभो! हमें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले चलो । तो प्रकाश की प्राप्ति के लिए दीप जलाना तो परमावश्यक है । जीवन ज्योति को आदीप्त करने के लिए प्रकाश को लाना आवश्यक है । जबसे सृष्टि बनी है तब से मनुष्य अन्धकार से युद्ध कर रहा है और इस पर सर्वांश में विजय पाने के लिए सामूहिक रूप से दीप जलाना आवश्यक है । घर-घर दीप जलाना अनिवार्य है । इसीलिए दीप जलाने को पर्व घोषित कर दिया गया है । 'पर्व' का मतलब है **''पृणाति पिपर्त्ति पालयति पूरयति प्रीणाति च जगदिति पर्व''**। अर्थात् जो पालन करता है, पूर्ण करता है और तृप्ति करता है उसे पर्व कहते हैं और तृप्ति होती है भूमा से, प्रचुरता से, आधिक्य से । इसीलिए दीप एक पर्व है जब इसे सब जलाते हैं और जो इसे ठीक-ठीक जलाते हैं श्रद्धाभाव से ज्ञानपूर्वक जलाते हैं उनके जीवन में पर्व-ही होता है ।

हम कृषि करते हैं, उससे हमें जो उपलब्ध होता है उसे प्रभु कृपा मानते हैं और उसका अकेले सेवन करना पाप समझते हैं । हम चाहते हैं कि हमारा जो कुछ हो वह समाज के लिए राष्ट्र के लिए हो । तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित । सब कुछ 'इदं राष्ट्रीय इदन्न मम्'। तो जब आश्विन मास में फसल पककर किसान के घर आती है तो वह प्रसन्न, सन्तुष्ट और तृप्त होता था और अकेला न खाये इसलिए सर्वप्रथम यज्ञदेव को समर्पित करता था, सबके लिए देने का प्रयत्न करता अतः वैदिक परम्परा में यही 'नवसस्येष्टि' नये अन्न की इष्टि अर्थात् यज्ञ ही दीपपर्व था । अमावस्या के दिन सब 'नव' अन्न से यज्ञ करते थे घर-घर दीप जलाते थे यहीं से अर्थात् जब धरती पर और कोई संस्कृति नहीं थी, कोई सभ्यता नहीं थी, वैदिक संस्कृति और सभ्यता ही थी तब से हम दीपपर्व मनाते चले आये हैं । राम खुद उस संस्कृति में पले, बढ़े और उसके पोषक थे । यह पर्व तो आदिपर्व है, जिसे राम के पूर्वज भी मानते थे ।

इस पर्व का नाम 'नवसस्येष्टि' है अतः यह सिद्ध है कि जब से धरती पर मानवीय संस्कृति है तब से यह पर्व भी है । वैदिक संस्कृति चिरकाल से अजर-अमर है तो इसका कारण ये पर्व ही हैं । जिस वस्तु, जीवन, संस्कृति या सभ्यता में पर्व नहीं होते वह अक्षुण्ण चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकती । क्योंकि पर्व शब्द का अर्थ ही है पूर्ति । संस्कृत साहित्य में पर्व शब्द ग्रन्थि-गाँठ के पर्यायवाची के रूप में प्रसिद्ध है । संसार में सब ओर दृष्टिगोचर होता है कि जहाँ-जहाँ पर्व हैं, गाँठ है वहीं-वहीं वृद्धि है । जिसमें जितनी गाँठे हैं वह उतना ही ऋद्ध, वृद्ध और समृद्ध है । बांस में गांठ है इसीलिए वह इतना लम्बा है । दूर्वा घास में, लौकी आदि लताओं में जो वृद्धि है उसका कारण पर्व है, गांठ ही है । हमारी परम्परा तो पर्व से ही चलती है, इसलिए विवाह में भी हमारे यहाँ ग्रन्थि बन्धन होता है और जन्मदिवस को वर्षगांठ के रूप में मनाते हुए आयुष्यवृद्धि की कामना करते हैं ।

हमें तो प्रतीत होता है कि यही पर्वों की महान् परम्परा ही है जिससे हम हजारों झञ्झावातों में भी अडिग खड़े हुए हैं और यदि हमें अपने को जीवित रखना है तो पर्वों को जीवन्त रखना होगा । यदि ये पर्व अपने यथार्थ रूप में जीवित रहेंगे तो हमारी सभ्यता जीवित रहेगी, हमारी संस्कृति जीवन्त होगी । अतः संस्कृति के संरक्षक इन पर्वों को जीवित और यथार्थरूप में यथार्थ भावनाओं ओर प्रतीकों के साथ जीवित रखना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है और महत्तर उत्तरदायित्व है ।

यह पर्व हमें सिखाता है कि हमारा केवल हमारे लिए नहीं होना चाहिए इसी भाव के साथ हम अपने घर में आए अन्न के साथ नवसस्येष्टि करते हैं तथा जैसे दीपक सामर्थ्यानुसार यथाशक्ति अंधेरे

thearyasamaj.org

# मन को बदलना सीखें

स्वामी विष्वङ्

कार्य-जगत् में प्रत्येक कार्य-पदार्थ में तीन स्वभाव होते हैं। सत्व-गुण का शान्त स्वभाव, रजोगुण का चंचल स्वभाव और तमोगुण का मूढ़ स्वभाव। इन तीनों स्वभावों से रहित कोई कार्य-पदार्थ नहीं है। हाँ कुछ पदार्थों में परमेश्वर ने कुछ स्वभावों को निश्चित रूप में उद्बुध (= प्रकट) करके रखा है और उनका नियन्त्रण परमेश्वर स्वयं करते हैं। उदाहरणार्थ अग्नि है, जिसका स्वभाव उष्ण है और सदा उष्ण को प्रकट करके रखता है। हाँ जहाँ-जहाँ अग्नि-पदार्थ अप्रकट (= अनुद्बध) रहता है वहाँ-वहाँ अग्नि का उष्ण स्वभाव भी अप्रकट रहता है। परन्तु रहती है। ऐसा नहीं होता कि अग्नि तो प्रकट हो जाये पर उष्णता अप्रकट रहे। इस प्रकार अनेकों पदार्थ हैं, जिनके स्वभावों का नियन्त्रण ईश्वर के अधीन है। परन्तु परमेश्वर निर्मित कुछ ऐसे पदार्थ भी हैं, जिनका नियन्त्रण जीवात्मा-मनुष्य के अधीन भी होता है। उन पदार्थों में मन एक महत्वपूर्ण पदार्थ है।

यद्यपि मन में तीनों (शान्त, चंचल व मूढ़) स्वभाव रहते हैं और परमेश्वर ने मन को शान्त प्रधान स्वभाव वाला बनाया भी है। परन्तु मन सदा शान्त स्वभाव वाला नहीं रहता है। यदि मन पूर्ण रूप से परमेश्वर के अधीन होता, तो हो सकता था कि मन सदा शान्त रहे। परन्तु मन पूर्ण रूप हो सकता था कि मन सदा शान्त रहे। परन्तु मन पूर्ण रूप से ईश्वर के अधीन नहीं रहता। परमेश्वर ने मन को जीवात्मा के अधीन कर रखा है। इसलिए जीवात्मा अपने अधीन मन को अपने अनुसार चलाता है। इसी कारण मन कभी शान्त दिखाई देता है, तो कभी चंचल दिखाई देता है और कभी मूढ़ भी दिखाई देता है। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह मन को शान्त बनाये रखे या चंचल या मूढ़। यदि मनुष्य को इस बात

*शेष भाग अगले पृष्ठ पर .....*

---

से लड़ता रहता है वैसे ही हम भी अज्ञान, अन्याय, अभाव और आलस्य रूपी अंधेरे से हमेशा लड़ते रहें। यह अंधेरा कभी हम पर हावी न होने पाये। जितनी शक्ति हमारे पास है उसी से इन अंधेरों से लड़ने के लिए सर्वदा सन्नद्ध रहें। सद्भावना, श्रद्धा और समर्पण के साथ दीप जलना ही पर्व है। दीपों की अवली-पंक्ति बना देने का नाम दीपावली है। किन्तु बाहर दीपक जलाकर अन्दर अन्धेरा रह गया तो पर्व सफल नहीं हो सकता। पर्व का साफल्य अंधेरे के नाश में है।

हम आर्यों के लिए जहाँ यह पर्व आर्य संस्कृति का परिचायक होने से महत्वपूर्ण है वहीं इस पर्व का महत्व अत्यन्त बढ़ जाता है, क्योंकि इसी दिन सन् १८८३ में आर्यसमाज के संस्थापक, आर्यसंस्कृति के प्रचारक, वेद सभ्यता के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द रूपी महादीपक ने करोड़ों छोटे-छोटे दीपकों को प्रज्जवलित करने के उपरान्त निर्वाण को प्राप्त किया था। इस पर्व को हम श्रद्धांजलि दिवस के रूप में भी मनाते हैं। मेरे ऋषि ने मोक्ष की महानतम उपलब्धियों को छोड़कर करोड़ों करोड़ दीन दुःखियों, बिछुड़े-पिछड़े दलित-वलित नरनारियों के दुःखों को दूर करने के लिए, परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारतमाता के कष्ट को हरने के लिए, स्वनिर्मित मूर्तियों की पूजा में संस्कृति को प्रभुनिर्मित मूर्तियों की पूजा सिखाने के लिए, ईश्वराज्ञा में स्वजीवन को समर्पित कर दिया था। जीवन भर पराये कष्टों को देख कर रोने वाले देव दयानन्द को हमने नहीं समझा और हमारी नासमझी के कारण ही देवदूत को सारे जीवन धूल-मिट्टी, कंकर-पत्थर सहना पड़ा और विषपान भी करना पड़ा। जड़ मूर्तियों के उपासक, पत्थरों के पुजारियों के पास पत्थर के अलावा और देने को था भी क्या? बड़प्पन तो उस ऋषि का था जो कहता था- **"मैं तो बाग लगा रहा हूँ, बाग लगाने में माली के सिर पर धूल मिट्टी गिर ही जाया करती है, मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि यह बगिया हरी-भरी रहे।"** हे दिव्य देवर्षि! तुम्हें प्रणाम।

जीवन भर तिल-तिलकर जलने वाले इस महादीप की ज्वलित शिखा की जीवन्तता ने करोड़ों लोगों को देदीप्यमान किया और जाते-जाते गुरूदत्त जैसे नास्तिक को आस्तिक बना गया। अहा! यह जीवन, यह दीपन, कितना प्यारा था की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।" आइए इस महादीप की दीप्ति से दीप्तिमान होकर ऋषि प्रदर्शित मार्ग पर चलकर पिछड़ों के पथपर करोड़ों दीप जलाकर उस ऋषि को सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित करें। यही दीपावली का दीपन, प्रदीपन और उद्दीपन है। आओ दीप जलाएँ साधो! आओ दीप जलाएँ।

'टंकारा समाचार' से साभार

.....***.....

thearyasamaj.org

का पता चल जाये कि मन को जिस स्वभाव वाला बनाना हो उस स्वभाव वाला बनाया जा सकता है और वह भी स्वयं के हाथों में है । इस बात को कैसे माना जाये कि मनुष्य स्वयं मन को शान्त, चंचल या मूढ़ बना सकता है? इसका समाधान सरल है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति कभी चंचल, तो कभी शान्त, कभी मूढ़ भी रहता है । यह सभी को प्रत्यक्ष है ।

यह नहीं हो सकता कि कोई सदा ही चंचल, शान्त या मूढ़ रहता हो, ऐसा सम्भव नहीं है । यह अनुभव सभी करते हैं कि एक ही स्वभाव में सदा कोई नहीं रहता इसका तात्पर्य यह है कि मन का स्वभाव बदलता रहता है, तो कोई न कोई बदलने वाला होना चाहिए । ईश्वर ने मन को जीवात्मा के अधीन कर रखा है । ऐसी स्थिति में ईश्वर बदलने वाले नहीं हैं । ईश्वर से भिन्न चेतन तत्व जीवात्मा ही है, इसका अर्थ यह हुआ कि जीवात्मा ही मन के स्वभाव को बदलने वाला है । मनुष्य इस बात को अनुभव नहीं कर पा रहा है कि मन चंचल है, तो उसे चंचल मैंने बनाया, मन मूढ़ है, तो उसे मूढ़ मैंने बनाया या मन शान्त है, तो उसे शान्त मैंने बनाया। मनुष्य इस बात को जिस दिन विवेक पूर्वक जानेगा, उसी दिन से मन को जिस स्वभाव वाला बनाना वह चाहता है मन भी उसी स्वभाव वाला बन जायेगा । यहाँ इतना अवश्य जानना होगा कि मन क्या है? मन में कितने स्वभाव हैं? क्या-क्या स्वभाव हैं? मन के स्वभाव कैसे बदलते हैं? आदि-आदि ।

संसार में कोई चंचल दिखाई दे रहा है, तो वह चंचल इसलिए है कि उसने मन को चंचल बनाया । यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होगा कि उसने मन को चंचल ही क्यों बनाया, शान्त या मूढ़ क्यों नहीं? यहाँ इसका समाधान यह है कि मनुष्य में पिछले जन्मों के अनगिनत संस्कार रहते हैं, उन संस्कारों में चंचलता के भी संस्कार रहते हैं । वर्तमान जन्म के भी संस्कार हैं और वर्तमान परिवेश-माहौल में जिन-जिन लोगों के साथ वह रहता है, उनका ज्ञान व अज्ञान का प्रभाव पड़ता है । उसके साथ रहने वाले जिस प्रकार के कार्यों को करते हैं, उनका भी प्रभाव पड़ता है और उसे जो ज्ञान, अज्ञान अन्यों के द्वारा शिक्षा के रूप में प्राप्त हो रहा है, उसका भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है । इन (पूर्व संस्कार, वर्तमान संस्कार, वर्तमान के कार्य, ज्ञान, अज्ञान) सभी कारणों के आधार पर मनुष्य अपने मन को बदलता रहता है । पूर्वोक्त कारणों से स्पष्ट होता है कि मनुष्य चंचल इसलिए दिखाई दे रहा है क्योंकि वह चंचलता वाले संस्कारों से प्रेरित हुआ है, चंचल इसलिए दिखाई दे रहा है क्योंकि वर्तमान में चंचल हो कर कार्य करने वालों को देख कर प्रभावित हो रहा है, चंचल इसलिए दिखाई दे रहा है क्योंकि वर्तमान परिवेश ने उनको चंचल होने की जानकारी दी है ।

यहाँ पर यह नहीं समझना चाहिए कि उसे एक ही प्रकार का परिवेश मिला हो, एक ही प्रकार का ज्ञान मिला हो या एक ही प्रकार के संस्कार हों । हाँ सभी को सभी प्रकार के परिवेश, संस्कार, ज्ञान प्राप्त हुए हैं । परन्तु जो व्यक्ति जिन संस्कारों से अधिक प्रेरित होता है, वे ही संस्कार अधिक उभरते हैं । जिस परिवेश में अधिक रहता है, उसी परिवेश को अपनाने की चेष्टा करता है । शिक्षा के रूप में जिस ज्ञान या अज्ञान को अधिक ग्रहण करता है, उसी के आधार पर जीवन जीना चाहता है । इसलिए जो व्यक्ति हमें चंचल दिखाई दे रहा है, वह इसी कारण चंचल दिखाई दे रहा है, क्योंकि उसने चंचलता के संस्कारों, परिवेश, कार्यों और अज्ञान से प्रेरित होकर अपने-आपको चंचल बनाया है । यहाँ इस बात को अच्छी तरह समझना चाहिए कि मन जड़ होने से स्वयं चंचल नहीं बनता, उसे चंचल बनाने वाला चेतन जीवात्मा है ।

जब मनुष्य को इस बात का बोध होता है कि मन अपने-आप चंचल, मूढ़ या शान्त नहीं होता, उसे तो हम अर्थात् जीवात्माएँ चंचल आदि बनाती हैं । तब मनुष्य मन को अपनी चाह के अनुरूप बना लेता है । प्रायः मनुष्य मन के कारणों, स्वभावों आदि को जाने बिना ही मन को चलाने का प्रयत्न करता रहता है । ऐसा प्रयत्न व्यर्थ ही हो जाता है, क्योंकि जिस पदार्थ से व्यवहार करना है, उस पदार्थ को जाने बिना ही उसका उपयोग लिया जा रहा है । जाने बिना तो उपयोग में लिया जा सकता है, परन्तु उतना लाभ नहीं लिया जा सकता है जितना लाभ जान कर लिया जाता है । इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति का कर्तव्य बनता है कि वह मन को जाने, समझे और उसे उचित उपयोग में लाना सीखे । तभी अध्यात्म-मार्ग प्रशस्त हो सकेगा ।

'परोपकारी' से साभार

.....***.....

thearyasamaj.org



## - काव्य जगत -

# वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा

पं. प्रकाशचन्द्र 'कविरत्न'

असत शम्भु की पूजा जिस ने विसारी । बना सच्चे शंकर का जो था पुजारी ।
धराधाम सुखसाज पर लात मारी । बना लोकहित पूर्ण जो बह्मचारी ।
किया देश सारे को अपना बसेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।। १ ।।
दशा जिसने भारत की बिगड़ी सुधारी । किये एक जिसने शिखा-सूत्रधारी ।
धर्मवीर सेवाव्रती क्रान्तिकारी । बनाये थे जिसने बहुत नर व नारी ।
किया जिसने फिर जागृति का सवेरा। वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।२।।
नया पन्थ जिसने न कोई चलाया । पुरातन जो वेदों का सन्देश लाया ।
अविद्या का जिसने विकट दुर्ग ढाया । अनार्यों को फिर आर्य जिसने बनाया ।
दिया आसरा सज्जनों को घनेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।३।।
प्रथम जिसने नारी जगत् को जगाया । अनाथ और विधवा को धीरज बंधाया ।
छुआछुत का भूत जिस ने भगाया । गऊरक्षा का प्रश्न जिसने उठाया ।
कृपा हाथ जिसने दलित जन पै फेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।४।।
चलाने को फिर वेद-शिक्षा-प्रणाली । यहां नींव गुरूकुल की जिसने थी डाली ।
पुनः आर्य जाति सुसांचे में ढाली । बहा जिस ने दी गंगा सद्ज्ञान वाली ।
किया दूर जिसने अविद्या अंधेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।५।।
बना जो कि भारत के उपवन का माली । हृदय रक्त से सींची हर डाली डाली ।
की हरयाली चहुं दिश विपद् जिसने टाली । नई जान डाली शिथिलता निकाली ।
उखाड़ा था भ्रम भूत का जिसने डेरा। वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।६।।
मेरी शिक्षा पै आर्यो ध्यान धरना । मेरे बाद ऐसी न तुम भूल करना ।
समाधि न मेरी कहीं तुम बनाना । न चद्दर न तुम फूलमाला चढ़ाना ।
न मस्तक झुकाना यह उपदेश मेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।७।।
न पुष्कर, गया अस्थियां ले के जाना । न गंगा में तुम मेरी अस्थियां बहाना ।
न मेरे लिए पाठ पूजा रखाना । अवैदिक क्रियाएं न कराना ।
फकत हवन करना यह मन्तव्य मेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।८।।
ये झंझट न तुम व्यर्थ में मोल लेना । मेरी अस्थियां खेत में डाल देना ।
कि जिस से मेरी अस्थियां खाद बन के । कभी काम आयें कृषक दीन जन के ।
यूं कह जिस ने टाला अविद्या का घेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।९।।
परमलक्ष्य था जिसका जग की भलाई । बराबर थी जिस को प्रशंसा बुराई ।
क्षमाशीलता खूब जिसने दिखाई । दिया जिसने विष जान उस की बचाई ।
दयासिन्धु अज्ञानसागर का बेड़ा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।१०।।
न थे पास मठ धाम चेली न चेला । न सोना न चांदी न पैसा न धेला ।
'प्रकाशार्य' संकट विकट जिस ने झेला । करोड़ों के आगे डटा जो अकेला ।
गया कांप जिस से प्रपंची लुटेरा । वही पूज्य गुरू है दयानन्द मेरा ।।११।।

.....***.....

thearyasamaj.org

# ऋषिवर दयानन्द

श्रीमति सावित्री देवी 'प्रभाकर'

हुआ चमत्कृत विश्व, अरे यह कौन? वीरवर संन्यासी?
किसकी भीषण हुंकारों से, काँप उठी मथुरा, काशी?
यह किसका गर्जन, तर्जन है कौन उगलता व्याला है?
किसकी वाणी में से निकली आज धधकती ज्वाला है?
सकल ज्ञान-विज्ञान-विभव का, जिसके भीतर सार भरा।
सद्-अभिलाषाओं का जिसमें, लीन हुआ उद्यान हरा ।।
लेकर विश्व-विजयिनी प्रतिभा, देवदूत बन कर आया ।
तम रजनी का तिमिर हटा कर, विमल चन्द्रमा मुस्काया।।१।।

नाना-धर्म सम्प्रदायों का, भीषण तांडव होता था ।
हँस-हँस कर हिन्दू समाज, अपना बल पौरूष खोता था ।।
झूठे झगड़ों में फँसने से, धर्म, कर्म, का ध्यान न था ।
अपने वैदिक धर्म पुरातन, का कुछ भी अभिमान न था ।।
सभी भूल में पड़े मूल को, समझ न कुछ भी पाते थे ।
घोर अविद्या के गहरे सागर में गोते खाते थे ।।
सीधा, सच्चा, मार्ग दिखाकर, एक ब्रम्ह को बतलाया ।
तम रजनी का तिमिर हटा कर, विमल चन्द्रमा मुस्काया ।।२।।

निर्भयता का बन प्रतीक, चल पड़ा वीर मतवाला था ।
आन, बान, थी नई शान, उसका हर काम निराला था ।।
वेदोक्त ज्ञान, युक्ति प्रमाण, उसके अकाट्य हो जाते थे ।
करते जो उससे शास्त्रार्थ, सब ही परास्त हो जाते थे ।।
मच गई दुंदुभि दूर दूर, उस वीर, बाल ब्रह्मचारी की ।
उसके ऊपर श्रद्धा अगाध, हो गई सभी नर नारी की ।।
प्रभा हीन जग, दीप्तिमान कर, उजियाला बन कर छाया ।
तम रजनी का तिमिर हटा कर, विमल चन्द्रमा मुस्काया ।।३।।

सत्य, साधना, संघर्षण में, अपना जीवन झोंक दिया ।
योग, त्याग, तप से, कौशल से, करूणा क्रन्दन रोक दिया ।।
मिटा दिया सब मिथ्याडंबर, असत-जाल, छल छन्द मिटा ।
तर्क शास्त्र की तीव्र धार से, पोपों का पाखण्ड मिटा ।।
सत्य-अर्थ रवि के प्रकाश ने, दूर हटा दी अँधियारी ।
सबके मानस में सुलगा दी, वेद-ज्ञान की चिनगारी ।।
अद्भुत वेद प्रमाण, युक्तियाँ, देकर सबको समझाया ।
तम रजनी का तिमिर हटाकर, विमल चन्द्रमा मुस्काया ।।४।।

कितना झेला कष्ट, सहा कितना संकट, कितनी पीड़ा ।
जीवन भर दुख के सागर में, करता रहा अथक क्रीड़ा ।।
पी पी तरल गरल के प्याले, खोने जन्म मरण निकला ।
स्वार्थ त्याग कर, बलि वेदी पर सिर से बाँध कफन निकला ।।
चकाचौंध कर दिया विश्व को, ब्रह्मज्ञान की गरिमा से ।
दीप्तिमान उज्जवल मस्तक था, ब्रह्मचर्य की प्रतिभा से ।।
आर्य जाति की नौका खेने, ऋषिवर दयानन्द आया ।
तम रजनी का तिमिर हटा कर, विमल चन्द्रमा मुस्काया ।।४।।

.....***.....

# जूझ कर

डॉ. पूर्णिमा वर्मा

जूझ कर कठिनाईयों से
कर सुलह परछाइयों से
एक दीपक रात भर जलता रहा
लाख बारिश आँधियों ने सत्य तोडे
वक्त ने कितने दिये पटके झिझोड़े
रोशनी की आस, पर टूटी नहीं
आस्था की डोर भी, छूटी नहीं
आत्मा में डूब कर के
चेतना अभिभूत करके
साधना के मंत्र को जपता रहा
एक दीपक रात भर जलता रहा
जगमगाहट ने बुलाया पर न बोला
झूठ से उसने कोई भी सच न तोला
वह सितारे देख कर खोया नहीं
दूसरों के भाग्य पर रोया नहीं
दिन महीने साल निर्मम
कर सतत् अपना परिश्रम
विजय के इतिहास को रचता रहा
एक दीपक रात भर जलता रहा ।

.....***.....

thearyasamaj.org

# तुम हिन्दू हो या आर्य?

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

**टिप्पणी**– महर्षि दयानन्द ने जाति को गौरवान्वित करते हुए यह बताया कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं । ऋषि के बलिदान के कुछ ही समय के पश्चात् काशी के नामी पण्डितों ने ऋषि के इस कथन की पुष्टि करते हुए यह सर्वसम्मत व्यवस्था दी कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं ।

हिन्दू नाम परकीय लोगों का दिया हुआ है । काशी के दर्जनों शीर्षस्थ पण्डितों की इस सर्वसम्मत व्यवस्था की विश्वनाथ मन्दिर की शिला से भी होती है । वहाँ भी आर्येतर का प्रवेश निषिद्ध है।

इस व्यवस्था को ध्यान में रखकर पारसियों ने माँग की थी कि यदि आर्य नाम को अपनाया जावे तो हम भी आर्यों में मिलने को तैयार हैं परन्तु हिन्दू महासभा ऐसा साहस न कर सकी । स्वामी वेदानन्द जी की पुस्तिका में यह प्रमाण मिल सकता है ।

जो लोग यह तर्क देते हैं कि सिन्धु से हिन्दू बन गया वे बतायें कि सिन्धु तो फिर भी सिन्धु ही रहा । फारसी शब्द में भी 'स' अक्षर से अनेक धातु तथा सहस्रों शब्द फारसी शब्द कोश में मिलते हैं अतः 'स' से 'ह' बन जाता है– यह सारहीन कुतर्क है। काशी के पण्डितों की यह व्यवस्था आँखें खोलने वाली है ।

आश्चर्य होता है कि अपने प्राचीन ग्रन्थों का प्रमाण न देकर हिन्दूत्वादी फारसी भाषा का सहारा लेते हैं । फारसी का भी इन्हें ज्ञान नहीं है ।

## ओ३म्

" तुम हिन्दू हो या आर्य

देखोः–

काशी के पण्डितों का व्यवस्था पत्र,

श्री हंसाय नमः–

सम्पतो यमर्यो विशुद्धानन्द सरस्वति स्वामिना ।

**अर्थ**– श्री हंसको नमस्कार हो–विशुद्धानन्द सरस्वति की सम्पति इसमें है ।

**और देखिये–**

शाके युग्म नवाश्व चन्द्र मिलिते मासे शुभे श्रावणे, काशी श्री वर तीर्थराज निकटा दगत्य शुक्लेचरे । पक्षे वै गिरिराज ना प्रति तिथौ जन्द्रस्य वारे शुभे, नीता ठाकुर सिंहराज तिलकैर्ह्येयं वरैः पण्डितैः ।। १ ।।

अर्थ – सातों के शुक्लपक्ष में बुधवार को काशी श्री श्रेष्ठ तीर्थ में पण्डित लोग श्री राज तिलक ठाकुर सिंह जी के समीप यह सम्मति पत्र ले गये ।

प्रश्न वाक्य

श्री मभ्दांगवत एकादश स्कंध सत्तरहवीं अध्याय में लिखा है कि सतयुग में केवल हंस वर्ण सब कोई कहाते थे त्रेता में हंसोक्त चारवर्ण चार आश्रम का विभाग होता गया । इस कारण वर्णाश्रमी कहाये परन्तु अब सब कोई हिन्दू नाम करके ख्यात करते हैं सो हिन्दू शब्द का चर्चा कोई शास्त्र में नहीं मिलता । इस हेतु हम यह जानना चाहते हैं के हिन्दू कहाना उचित किवां अनुचित है ।

उत्तरवाक्य ।।

वर्णाश्रमी देशबोधक जो हिन्दुशब्द है सो यवन संकेत है वर्णाश्रपी वोधक जोहिन्दूशब्द है यह भी यवन संकेत है । इस कारण हिन्दू कहाना सर्वथा अनुचित है यह निर्णय श्री काशीस मध्य टेढी नीमतले श्री महाराजाधिराज श्री काशीराज संरक्षित धर्मसभा में सत्पुरूषों ने किया –

इसके नीचे निम्नालिखित ४५ सम्मति देने वाले पंडितों के हस्ताक्षर हैं ।।

| | |
|---|---|
| १. श्री विश्वनाथ शर्मा, | २. श्री ग्रहमती शर्मा |
| 3. श्री प्यारे शर्मा | ४. श्री दमकी शर्मा |
| 5. श्री रामशरण शर्मा | ६. हरिशनाथ शर्मा |
| ७. श्री दाबू नाथ शर्मा | ८. श्री सोनमती शर्मा |
| ९. श्री हरीदत्त शर्मा ।। | |

(ये महात्मा अबसंन्यासी हैं और मनीषानन्द के नाम से प्रसिद्ध हैं और टेढी नीम में रहते हैं )

| | |
|---|---|
| १०. श्री महतावनारायण शर्मा | ११.श्री भानु शर्मा |
| १२.श्री आदि नाथ शर्मा | १३.श्री नन्दीपत शर्मा |
| १४.श्री श्यामलाल शर्मा | १५.श्री वेदी वस्तीराम शर्मा |
| १६.श्री माताचरण शर्मा | १७.श्री राधामोहन शर्मा |
| १८.श्री नवीन नारायण शर्मा | १९.श्री कालिकाप्रसाद शर्मा |
| २०.श्री कैलास शर्मा | २१.श्री मनमोहन शर्मा |
| २२.श्री सुमेंस शर्मा | २३.श्री गूदर शर्मा |
| २४.श्री रघुनन्दन शर्मा | २५.श्री बच्चू शर्मा |
| २६.श्री कीर्तिनाथ शर्मा | २७.श्री लाल शर्मा |
| २८.श्री द्वारकानाथ शर्मा | २९.श्री राजाराम शास्त्री |
| ३०.श्री बाल शास्त्री | ३१.श्री शिखाराम भट्ट |
| ३२.श्री बाबूदेव शास्त्री | ३३.श्री चन्द्रशेखर शर्मा |
| ३४.श्री देवदत्त शर्मा | ३५.श्री घनश्याम शर्मा |
| ३६.श्री रमापति शर्मा | ३७.श्री श्यामाचरन शर्मा |
| ३८.श्री जागेश्वर शर्मा | ३९.श्री अम्बिकादत्त शर्मा |
| ४०.श्री चण्डीदत्त शर्मा | ४१.श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा |
| ४२.श्री गोस्वामी पं.रघुनाथ प्रसाद शर्मा | ४३.श्री बाबा शास्त्री |
| ४४.श्री प्रभुनाथ शर्मा | ४५.श्री हरिहर शर्मा |

इन के पश्चात ४६ वीं संम्मति पं. दुर्गादत्त शर्मा की थी जिन्होंने कि अपनी सम्मति के साथ दो श्लोक और लिखे थे–

(हिन्दू शब्दोहि यवनेष्वधर्मि जन बोधकः अतो नार्हन्ति तच्छब्दौ बोध्यतां सकला जना ।।१।। पापिनां पापि यवनैस्संकेते कृत वासरः नोचि तस्स्वीकृतो अ्रमा भिहिन्दूभिती रितः ।।२।।

*शेष भाग अगले अंक में.....*

.....***.....

thearyasamaj.org

# आर्य जगत के समाचार व सूचनाएं

## आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का निर्वाचन संपन्न

आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई की साधारण सभा आर्य समाज सान्तकुज में संपन्न हुई, जिसमें २०१४-२०१५ के लिए निर्वाचन निमानुसार हुआ :-

**प्रधान** – पं. नामदेव आर्य, **उपप्रधान** – पं. धर्मधर आर्य तथा पं. अन्शुमान द्विवेदी, **मंत्री** – श्री नरेन्द्र शास्त्री, **उपमंत्री** – पं. नरेश शास्त्री एवं पं. विक्रम शर्मा, **कोषाध्यक्ष** – श्री विनोद कुमार शास्त्री, **संरक्षक द्वय** – श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री, श्री ईश्वरमित्र शास्त्री, **परामर्शदाता** – डा. सामदेव शास्त्री, **अन्तरंग सदस्य** – सर्व श्री पं. महेन्द्र शास्त्री, मिथिलेश शास्त्री, विजयपाल शास्त्री, महेश शास्त्री, नचिकेता शास्त्री, कृष्णा शास्त्री, योगेश शास्त्री, प्रभारंजन पाठक।

.....***.....

## आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र का निर्वाचन गत दिवस सर्वसम्मति से निमानुसार सम्पन्न हुआ:-

**प्रधान** – डॉ. ब्रह्ममुनि जी, **मंत्री** – श्री माधव राव देशपाण्डे, **कोषाध्यक्ष** – श्री उग्रसेन राठौर

इसी समय नई कार्यकारिणी का भी निर्वाचन हुआ ।

नव निर्वाचित पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ तथा 'आर्य सेवक' परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयां ।

.....***.....

# सभाक्षेत्र के समाचार एवं सूचनाएं

## आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. तथा विदर्भ का बृहदधिवेशन सन्निकट है। प्रदेशस्थ सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे कृपया अपनी आर्य समाज का वर्ष २०१३-१४ का वार्षिक वृतान्त निर्धारित प्रपत्रों में पूर्ण रूप से भर कर ३१-१-१५ तक सभा कार्यालय को भिजवाने का कष्ट करें । दशाश की राशि सभा के खाता क्रं. ११९५४००४३०, सेंन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया शाखा सदर, नागपुर

बृहदाधिवेशन एक ऐसा अवसर होता है जब हम मिलकर किए कार्यों का अवलोकन करते हैं तथा भविष्य की योजना बनाते हैं । इसके लिए सभी का सहयोग वांछित है । अच्छा हो कि सभा के पदाधिकारी एवं अन्तरग सदस्य महानुभाव अपने क्षेत्र की आर्य समाजों से सम्पर्क कर प्रेरित करें ।

सूचना को आवश्यक मान कर कृपया सहयोग प्रदान करें ।

| | | |
|---|---|---|
| यशपाल जानवानी | अनिल शर्मा | सत्यवीर शास्त्री |
| कोषाध्यक्ष | मंत्री | प्रधान |

.....***.....

## सभाक्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री विजय सिंह गायकवाड़ दिवंगत

श्री विजय सिंह गायकवाड़ जो सभा के पूर्व उपमंत्री रहें तथा आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर के वर्षों मंत्री रहें तथा वर्तमान में लम्बे अरसे से कोषाध्यक्ष रहे दिनांक २१-९-१४ को हृदयाघात से दिवंगत हो गए । सभाक्षेत्र में तथा विशेष कर जबलपुर में एक सक्रिय कार्यकर्ता थे । उनके निधन से जहां आर्य परिवार को क्षति हुई हैं वहीं सभा को महती हानि हुई है । मैं व्यक्तिगत रूप से तथा आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ की ओर से दिवगंत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं । सभा क्षेत्र में वरिष्ट कार्यकर्ता का निधन होना वास्तव में दुख का कारण है ।

मैं दुखी परिवार के प्रति शोक संवेदना प्रेषित करते हुए अपनी सहभागिता प्रगट करता हूं । प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें ।

सत्यवीर शास्त्री
प्रधान
आ.प्र. सभा म.प्र. व विदर्भ, नागपुर

.....***.....

## मंगलमय हो मिलन तुम्हारा

विगत दिनों आर्य-परिवारों में वैदिक विधि से विवाह संस्कार संपन्न हुए । सभा की ओर से वर-वधू को शुभाशीष एवं भावी जीवन के लिए शुभ कामनाएँ ।

कापूसतलणी :-

वरः- अनिल भीमरावजी फरकुंडे – हिरापुर

वधुः – वृषाली सुधाकर राव हटवार – कापूसतली

अमरावती :-

वरः- आशीष निलकंठराव देशमुख-अमरावती

thearyasamaj.org

वधु: - निलम विजय राव - इंगोले-नवसारी

आकोला :-

वर:- अश्वार्य गणेशराव वातकर - आकोला
वधु: - प्रणीता बाबूरावजी टवलारे - आकोला

परसापुर :-

वर:- योगेश अरूणराव काकड़ - परसापुर
वधु: - स्मिता दिनेशराव तिड़के - आकोजी जहांगीर

चांदूर रेल्वे :-

वर:- निककंठ नारायण राव मेहमे - पुलगाँव
वधु: - सुनीता देवरावजी हटवार - चांदूर रेल्वे

पथरोट :-

वर:- प्रवीण अरूणराव मेश्राम - पथरोट
वधु: - अरूणा महादेवराव जगताप - पथरोट

यवतमाल :-

वर:- आशीष मधुकार राव बढ़ीये-यवतमाल
वधु: - मेघा, पंजाबराव ताटेवार-यवतमाल

परतवाड़ा :-

वर:- महेश शांतारामजी जामुर्णे - परतवाड़ा
वधु: - रिना भगवतंराव जनवंधु - परतवाड़ा
वर:- राहुल धनराजजी वैष्णव - परतवाड़ा
वधु:- प्रवीणा ज्ञानेश्वर जाभूलकर - परतवाड़ा

अमरावती :-

वर:- किशोर लक्ष्मणराव मानकर - शिराला
वधु: - पल्लवी अरविंदराव हटवार - अमरावती
वर:- सतीश मनोहरराव खडेकर - अमरावती
वधु:- श्वेता अनिलराव करूले - अमरावती

जरूड :-

वर:- धीरज भारोतराव सहारे - अमरावती
वधु: - दीपिका भागवतराम भेश्राम - जरूड

पथरोट :-

वर:- राहुल आनंद प्रकाश बोबडे - पथरोट
वधु: - पूनम देविदास चिचोलकर - कापूसतलणी

.....***.....

## अन्त्येष्टि संस्कार संपन्न

कुष्ठा ३ जून - आर्य समाज कुष्ठा के ध्येयनिष्ठ मंत्री, वैदिक सिद्धान्तों के अवैतनिक प्रचारक अपनी निजी सायकल से ग्रामों में प्रचार करने वाले श्री नागोरावजी शेलोकार का स्वर्गवास ३ जून को हुआ ।

अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक पुरोहित श्री रामदासजी बालखड़े ने वैदिक विधिअनुसार संपन्न कराया । सभा की ओर से श्री ओमप्रकाश बोवड़े थे ।

१० जून को शांतियज्ञ सभा प्रधान पं. सत्यवीरजी की प्रमुख उपस्थिति में संपन्न हुआ । जिसमें ग्राम एवं नजदीक के आर्य सज्जन बड़ी मात्रा में उपस्थित थे ।

.....***.....

## भाषण

१०.०५.२०१४-चांदूर रेल्वे

श्री देवरावजी लक्ष्मणरावजी आर्य-डांगरी पूरा चांदूर रेल्वे में सभा प्रधान पं. सत्यवीर जी शास्त्री का भाषण श्री वासुदेवानंद सरस्वती की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । वर्तमान में आर्य समाज की आवश्यकता दर्शाते हुए वैदिक धर्म ही सुख शांति प्रदान करने वाला है । यह रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया ।

## प्रथम-वर्धापन दिन

१६.०५.२०१४-यवतमाल

यवतमाल लक्ष्मीनगर निवासी पंजाबरावजी ताटेवार के बंगले पर सायंकाल सात बजे वेद प्रवचन पं. सत्यवीर शास्त्री ने किया । प्रवचन सुनने के लिए महिलाएँ बड़ी संख्या में उपस्थित थीं । सोया था, जगाया ऋषि ने, इस गीत से विभा आर्या ने सबको मंत्र मुग्ध कर दिया था । शांतिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

.....***.....

## स्वमार्यम्-कृण्वन्तो विश्वमार्यम

समाचार-आर्यसमाज उमरखेड- श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बंधन) श्री रामभाऊ मुंगे गुरूजी के यहाँ यज्ञ का आयोजन किया गया । दि. ११/०८/२०१४ को श्री यादवराव महाजन (देवसरी) के यहाँ यज्ञ का आयोजन किया गया । यज्ञ में कई लोगों की उपस्थिति रही । कुछ पौराणिक मंडली भी थी । वैदिक भजन सुनकर हम भी यही भजन गायेंगे पौराणिकों को यह प्रेरणा मुंगे गुरूजी द्वारा की गई ।

दि. १८/०८/२०१४ श्री कृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम श्री माधवराव भोयर (उमरखेड़) के घर में आयोजन किया गया था । गोवंश वृद्धि पर भाषण से प्रेरित किया । आने वाली अभावश्या तिथि दि. २५/०८/२०१४ को चतुर्वेद शतक का पारायण होगा यह सूचना तथा प्रत्येक ने अपना एक-एक साथी लाने की प्रेरणा दि गई । आर्य समाज पर आज चारों ओर से हमला हो रहा और हमें शांति धारण कर बैठना अनुचित हैं । इसलिये जागृत रहकर काम करें । श्री भोयर गुरूजी के घर में दि.२५/०७/२०१४ को चतुर्वेद शतक की पूर्णाहुती देकर भोजन का स्वाद लिया । दुपहर ३ से ४ बजे तक भजन श्री मुंगे गुरूजी ने गाकर सूनाए तदनंतर भोयर गुरू जीने सभी का आभार माना कार्यक्रम समाप्ती की घोषणा की ।

.....***.....

thearyasamaj.org

## श्रद्धांजलि

आर्य समाज गोरखपुर, जबलपुर मध्य प्रदेश के जाने मान वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ता एवम भारतीय स्टेट बैंक से शाखा प्रबंधक पद से सेवा निवृत श्री विजय सिंह गायकवाड़ जी का दिनांक २१.०९.२०१४ को ७३ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया । वे एक अरसे से आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर के कोषाध्यक्ष थे और प्रतिनिध सभा म.प्र. व विदर्भ के उपमंत्री रह चुके थे । आपने एक आदर्श एवं अनुकरणीय कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया ।

श्री विजय सिंह गायकवाड़ जी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं । उनके अग्रज श्री जय सिंह गायकवाड़ जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अन्तरंग सदस्य हैं । उनकी पत्नी श्रीमती मीरा गायकवाड़ महिला आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर की उप प्रधान एवम पुत्र अजय और अनूप एवम पुत्री अदिति आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं । स्मरणीय है कि श्री विजय सिंह गायकवाड़ जी दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री गजानन शास्त्री, डॉ. प्रताप काले एवम गुरूकुल कांगड़ी वि वि में कार्यरत डॉ दीनदयाल विद्यालंकार के चाचा ससुर थे ।

अंत्येष्टि में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी सम्मिलित हुए । आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के प्रधान सत्यवीर शास्त्री आदि ने शोक सन्देश भिजवाये । श्रद्धांजलि सभा दिनांक २४.०९.२०१४ को संपन्न हुई जिसमें जबलपुर के गण्यमान्य नागरिकों ने उनके व्यक्तित्व एवम कृतित्व को स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की और शोकाकुल परिवार को सांत्वना प्रदान की ।

प्रेषक अनूप गायकवाड़

.....***.....

## जबलपुर में सर्वकल्याण महायज्ञ

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में दिनांक १४.१५.१६ नव.२०१४ को आर्य जगत् मूर्धन्य विद्वान्, ख्यातिलब्ध, स्वनामधन्य डॉ. वागीश आचार्य के पावन सान्निध्य में तथा पं. सतेन्द्र आर्य भजनोपदेशक-एटा के सुमधुर गीतसंगीत के साथ 'सर्वकल्याण महायज्ञ' कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है । सभी सज्जनों को भाग लेकर पुण्यलाभ प्राप्त करने हेतु सादर आमन्त्रित किया जाता है यह सूचना आर्यसमाज नेपियर टाउन के धर्माचार्य पं. धीरेन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रदान की गयी ।

.....***.....

आर्यसमाज दयानन्द भवन, नेपियर टाउन जबलपुर का वार्षिकोत्सव एवं वेदप्रचार का आयोजन दि.१८.०९.१४ से २१.०९.१४ तक सम्पन्न हुआ । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सामवेद पारायण यज्ञ, सुमधुर भजन तथा मननीय गहनचिन्तनपरक वैदिक सिद्धान्तमय प्रवचन प्रातः सायं आर्य समाज के मूर्धन्य वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री 'सहारनपुर' के सान्निध्य में सम्पन्न हुए जिसका लाभ जबलपुर के सभी समाजों से पधारे सदस्यों व सामान्य जनता ने लिया । सामवेद के पावन मन्त्रों का पाठ आर्य गुरूकुल होशंगाबाद के ब्रह्मचारियों ने किया । यज्ञ की पूर्णाहुति २१.०९.१४ को सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का सञ्चालन आर्य समाज के प्रधान श्री जगदीश मित्र कुमार ने किया ।

इस कार्यक्रम में आर्यसमाज के धर्माचार्य पं. धीरेन्द्र पाण्डेय आदि का अमूल्य योगदान रहा । सर्व श्रीमति डॉ. ईश्वर मुखी, सुमित्रा डुडेजा, डॉ. सावित्री सिंह, डॉ. अरूण सिंह, सरोजनी कौशल, सर्व श्री हृदय स्वरूप गुप्ता, अमरनाथ शर्मा, वीरेन्द्र धमीजा, के.डी. कौशल, सुदेश धमीजा, हरिशंकर गुप्ता, अरूण वासुदेव, नीरज आहूजा, समीर कोचर जयसिंह गायकवाड़, रामविशाल पाण्डे आदि विशिष्ट जनों की गरिमामयी उपस्थिति में रही ।

इस अवसर पर लिया गया चित्र हम पृष्ट २४ पर छाप रहे हैं ।

.....***.....

## आर्य समाज परतवाड़ा

आर्य समाज द्वारा श्रावणी पर्व व जन्माष्टमी उत्साह पूर्वक मनाया गया । दिनांक १० अगस्त से १७.०८ तक मराठी वेद भाष्यकार श्री रामसिंह ठाकुर के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ । श्री ठाकुर ने प्रति दिन हवन करवाया तथा सुमधुर वाणी से विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिया । काफी संख्या में लोगों ने लाभ उठाया । आर्य समाज के पदाधिकारियों अर्थात् सर्व श्री मदन कुमार जांभुर्ण प्रधान, तेजव्रत गोवारे, मंत्री जीवन गोंडवले आदि द्वारा विशेष रूचि लेकर कार्य हुए का सफल करवाया । नगर के विशिष्ट जनों ने उपस्थित हो कर सहयोग प्रदान किया ।

इस अवसर पर खींचा गया चित्र हम पृष्ट २३ पर प्रदाशित कर रहे हैं ।

.....***.....

## सुश्री विदुषी सोनी की "परमपिता तो एक है" सीडी का लोकार्पण

लेफ्टिनेंट जनरल श्री ए.एस.रावत (सी.एम.एम. जबलपुर) द्वारा नगर की प्रतिभाशाली गायिका, आकाशवाणी कलाकार एवं आर्य समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में भजनों के माध्यम से सहयोग देने वाली स्वर साधिका इंजी.कु. विदुषी सोनी की सीडी "परमपिता तो एक है" भजन संग्रह को लोकार्पण गत दिवस आर्य समाज नेपियर टाउन, जबलपुर में संपन्न हुआ । इस सीडी के गीतों की रचना उनकी नानीजी श्रीमती सरोज वर्मा (78 वर्ष) तथा मार्गदर्शन कु. विदुषी सोनी के गुरू श्री प्रकाश वेरूडकर द्वारा दिया गया है । इस अवसर कु. विदुषी द्वारा भक्ति गीतों की सस्वर प्रस्तुति दी गई जिसमें आर्य समाज एवं नगर के गणमान्य अतिथिगण उपस्थित हुए । कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अमरनाथ शर्मा एवं संचालन श्री अतुल वर्मा, भोपाल द्वारा किया गया । आप श्री प्रकाश मंत्री आर्यसमाज, गोरखपुर एवं श्रीमती अर्चना सोनी की सुपुत्री हैं ।

इस अवसर पर लिया गया चित्र हम पृष्ट २४ पर दे रहे हैं ।

.....***.....

thearyasamaj.org

# कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' सम्मान

सामाजिक एवं औद्योगिक संस्था 'देव विमल हर्बल हैरिटेज एण्ड एजुकेशनल सोसायटी' देहरादून की ओर से एक भव्य अलंकरण समारोह में दिनांक 14 सितम्बर, 2014 को गुरुकुल का गड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ0 सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' के सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ0 सुरेन्द्र कुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय या`गदान करने के फलस्वरूप दिया गया। यह भव्य अलंकरण समारोह हिमालयन पब्लिक स्कूल, देहरादून में सम्पन्न हुआ जिसमें अध्यक्ष के रूप में हिमालयन ड्रग्स के अध्यक्ष एवं उद्योगपति डॉ0 एस0फारूख, मुख्य अतिथि ले0जन0, एच0बी0काला, विशिष्ट अतिथि डॉ0 वी0के0जैन कुलपति दून विश्वविद्यालय, सोसायटी के अध्यक्ष श्री हर्षवर्धन आर्य एवं सचिव डॉ0 आदित्य आर्य उपस्थित थे। इन्होंने कुलपति जी को स्मृतिचिह्न, अभिनन्दन पत्र आदि देकर सम्मानित किया। गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शिक्षक, शिक्षकेत्तर एवं विद्यार्थी वर्ग ने इस सम्मान को पाने पर प्रसन्नता व्यक्त की है ।

उल्लेखनीय है कि वर्ष में उत्तराखण्ड की ओर से डॉ. सुरेन्द्र कुमार को यह दूसरा सम्मान प्राप्त हुआ है । इससे पूर्व इन्हें 'ऑल इंडिया कांफ्रेस ऑफ इंटलेक्चवल सोसायटी, दिल्ली' की ओर से 'उत्तराखण्ड रत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया था ।

इस अवसर पर खींचा गया चित्र हम पृष्ट २४ पर दे रहें हैं ।

.....***.....

# भाग्य की रचना आप खुद करते हैं

सद्गुरू

**नदी सागर से मिलने के लिए नहीं बहती**

अक्सर लोग कहते हैं कि आपके भाग्य ने सब कुछ पहले से ही तय कर रखा है । पहले से कुछ भी तय नहीं है । बात बस इतनी है कि अनजाने में ही आपने खुद को कुछ खास स्थितियों में डाल लिया है । दरअसल, आपके भीतर अनजाने में ही कुछ खास तरह की आदतें, नजरिया और प्रकृति बन जाती है, और इनके मुताबिक आपका जीवन उसी दिशा में चलने लगता है । ऐसा इसलिए नहीं है कि कोई बाहरी अज्ञात शक्ति आपको उस दिशा में धकेल रही है । जिस भाग्य की बात आप कर रहे हैं, वह कुछ और नहीं, बल्कि अनजाने में खुद आपके द्वारा बनाई गई प्रकृति और आदतें हैं । वैसे इन्हें आप पूरे होशो हवास में भी बना सकते हैं । भाग्य अपना काम तो करता है, लेकिन उसकी अपनी सीमाएं है । भाग्य ही सर्वेसर्वा नहीं है ।

जैसे एक नदी का उद्गम पहाड़ों से होता है, शुरू में वह एक नाले जैसी होती है । फिर वह झरना बन जाती है । मैदानी इलाकों से बहते हुए अंत में यह समुद्र में जा मिलती है । क्या यह इस नदी का भाग्य है? नहीं, यह नदी का भाग्य नहीं, बल्कि नदी के पानी की प्रकृति है । पानी का काम ऊंची जगह से नीची जगह की तरफ लगातार बहना है । नदी के मन में समुद्र से मिलने की कोई इच्छा नहीं है, हालांकि कवियों ने ऐसा कहा है । अगर आप बांध बना देंगे तो नदी वहां बैठकर रोएगी नहीं कि मुझे तो समुद्र में जाकर मिलना था । कविताओं में ऐसी बातें हो सकती हैं । हमें बस उनका आनंद लेना चाहिए । तमाम दिल बहलाने वाली कहानियों से खुद को अलग कीजिए और जीवन को वास्तविकता में जीने की कोशिश कीजिए । अगर आप यह जानते हैं कि आप जाना कहां चाहते हैं, तो बेहतर यही है कि आप अपने भाग्य को अपने हाथ में ले लें, नहीं तो यहां आप एक फालतू इंसान के तौर पर ही पड़े रहेंगे । जब आप अध्यात्म की तरफ मुड़ते हैं, तो आप मानें या न मानें, लेकिन वास्तव में आप यह कह रहे होते हैं कि मैं अपने भाग्य को अपने हाथों में लेना चाहता हूं । जब आप अध्यात्म के मार्ग पर चलना शुरू करते हैं, तो असल में आप अपने भाग्य की रचना खुद करने लगते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके कर्म कैसे हैं ।

'दैनिक भास्कर' से साभार

.....***.....

thearyasamaj.org

आर्य समाज नेपियर टाउन, जबलपुर (इस चित्र से सम्बंधित समाचार पृष्ठ २१ पर दृष्टव्य है )

आर्य समाज परतवाड़ा (इस चित्र से सम्बंधित समाचार पृष्ठ २१ पर दृष्टव्य है )

thearyasamaj.org

# आर्य सेवक, नागपुर

प्रति, _____

_____

आर्य जगत की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार का अभिनन्दन करते हुए । समाचार पृष्ठ २२ पर देखें ।

समाचार पृष्ठ २१ पर देखें ।

प्रकाशक : प्रा. अनिल शर्मा, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ, नागपुर, फोन: 0712-2595556 द्वारा उक्त सभा के लिए प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : आर्य प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर, फोन : 0761-4035487